दीवाना
मुफ्त पोस्टर
१·५०
रुपये

दीवाना

...: २ वर्ष: १७ १५ जनवरी १९८१

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	३५ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१८ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

मुख पृष्ठ पर

चुनरी सम्भाल गोरी
उड़ी चली जाये रे
मार न दे सीटी कोई
पुलिस वाला हाय रे।
केसरी, सफेद, हरा
तिरंगा बना जाये रे
भारत माता की जय कहे
जो भी आये जाये रे॥

आगामी अंक में

जलपरी की कहानी

कौन सी साड़ी पहनूं गाइड

मेरे सामने वाली खिड़की....

मुफ्त पोस्टर गवास्कर
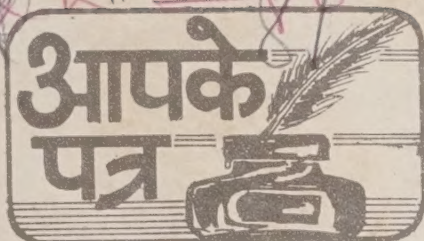
दीवाना का अंक १८ मिला, हाथ में आते ही पढ़ने बैठ गया। दीवाना पढ़ते पढ़ते मैं तो सचमुच दीवाना हो गया। मुझे सभी फीचर पसन्द आये। दीवाना पोस्टर दे कर आपने बहुत ही अच्छा किया, इससे हमें दीवाने की रोचक सामग्री के साथ साथ पोस्टर भी मिल जाता है इसके लिये बहुत धन्यवाद।

—पदम बहादुर, डीबरूगढ़ (आसाम)

दीवाना अंक १८ प्राप्त हुआ। मोहम्मद अली के रंगीन पोस्टर के साथ उनके जीवन की रोचक बातें पढ़ कर बहुत आनन्द आया। मोटु पतलू, काका के कारतूस और आदिमानव फिर नया रुप ले कर आये।

'क्यों और कैसे', 'खेल खेल में' स्तम्भ रोंचक और ज्ञानवर्धक रहे। अगले अंक की इन्तज़ार में।

—दीप छाबरा, (मोती नगर)

दीवाना अंक १८ दीवानी सामग्री के साथ इस बार फिर लेट मिला। अली का पोस्टर बहुत पसन्द आया। सभी फीचर्स दिलचस्प थे। आशा है आनेवाले दिनों में क्रिकेट खिलाड़ियों के पोस्टर दीवाने की शोभा बढ़ायेंगे। मोटू पतलू का रंगीन न होना अखरता है। दीवानी चिपकियाँ बहुत पसन्द आईं। आशा करता हूँ आगामी अंक समय पर मिल सकेंगे।

वीरेश कुमार—भटिंडा

दीवाना समय पर निकालने का पूरा प्रयत्न किया जा रहा है।

—सम्पादक

इस बस में

धक्के मारने वाली सवारियों के लिए

बिना टिकट

सफर

करने की

छूट है

दीवाना

SIMCO

PERMANENT
HAIR DYE . HAIR FIXER
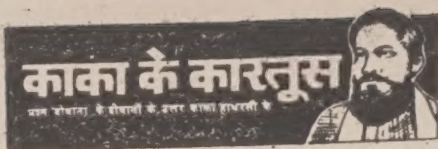
बहादुर सिंह नेपाली रोहतक (हरियाणा)

प्र० इंसान छुटपन में बालक, जवानी में युवा, तो बुढ़ापे में ?

उ० बूढ़ेपन में बुढ़ऊ बन, करे प्रभू का ध्यान।
या मुरारजी की तरह, 'जीवनजल' का पान।।

चंद्रभान अनाडी, जबलपुर

प्र० मैरीगुड लाइफ, विदाउट वाइफ़। आपकी एडवाइस ?

उ० वाइस से लाइफ बने, बिन वाइफ सुनसान।
नहीं किराए पर मिले, उसको कहीं मकान।।

नरिंद्र निंदी, कपूरथला

प्र० इंसान जब चारों ओर से निराश हो जाए तो ?

उ० सत्ता से पत्ता कटे, हो कर के असहाय।
जाय किसानों की शरण, चरणसिंह बन जाय।।

प्रदीप मेहता सीवन (कुरुक्षेत्र)

प्र० मेरी इच्छा हेमामालिनी से शादी करने की थी, किंतु उसे धर्मेन्द्र झपट ले गए। अब क्या करूँ काका ?

उ० छोड़ी जो धर्मेन्द्र ने, उसे पटालो यार।
बिना परिश्रम मुफ्त में, बच्चे पाओ चार।।

अशोक जौहर 'नीलम', मोती बाजार, देहरादून

प्र० : राजनारायण की दाढ़ी का एक बाल मुझे दिला सकते हैं ?

उ० दाढ़ी की गाड़ी गिरी, बाल हुए बेकार।
यदि तुमने मँगवा लिया, मिले हार पर हार।।

मुहम्मद महमूद अंसारी, रायपुर

प्र० एक लड़की मेरी दुकान के सामने से गुज़रती है तो मुस्करा देती है, क्यों ?

उ० लल्लू जी उल्लू बनें, लल्ली जब मुस्कात।
जाय अगूँठा दिखाकर, जब आजाय बरात।।

अहसान अली, गांधी नगर, दिल्ली

प्र० अगर लड़की चाँदनी चौक है, तो लड़का ?

उ० सीधा सा यह प्रश्न है, नोट करो उत्तर्र।
लली चाँदनी चौक है, लला घंटाघर्र।।

श्याम सुंदर बेसरा, झारसगुडा

प्र० तीन सौ की नौकरी में गृहस्थी की गुज़र नहीं होती, रेलवे में काम करता हूँ, क्या करूँ ?

उ० थ्री टायर की कोच के टी.टी.ई. बन जाउ।
मिलें गृहस्थी के मजे, इतने नोट कमाउ।।

कृष्णचंद्र सोनी, खुरशीपार, भिलाई

प्र० अगर आज के युग में रावण विरोधी दल होता तो ?

उ० जगजीवन बाबू की तरह धोखा नहीं खाता।
मार छलाँग काँग्रेस आई में मिल जाता।।

राजेंद्र सिंह राजा, जमशेदपुर

प्र० नेता का आजकल असली रूप क्या है ?

उ० नेता रूप-स्वरूप यह, नोट कीजिए आप।
चमचा वह सरकार का, जनता का है बाप।।

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली - ११०००२.

मदहोश

हा हा हा

● क्रिकेट का टेस्ट मैच हो रहा था। स्टेडियम में दर्शक खचाखच भरे थे। आयोजकों ने कुर्सियां एक दूसरे से सटाकर लगा रखी थीं। एक दर्शक को बाथ रुम जाने की हाजत हुई। वह परेशान। जाए तो जाए कैसे? एक तो रास्ता मिलना मुश्किल, दूसरे उठे और सीट से हाथ धो बैठे। वह परेशानी और बेचैनी में अपनी सीट पर उचकने लगे ठीक पीछे बैठे दर्शक ने उनसे उनकी बेचैन और उचकने का कारण पूछा। उन्होंने उसे बता दिया। पीछे वाला बोला, 'इसमें घबराने की क्या बात है? अपने सामने वाले की कोट की जेब में कर दो।'

वह बोले, 'अगर इसे पता लग गया तो क्या होगा?'

पीछे वाला बोला, 'पता नहीं लगता भाई! मैंने भी तो ऐसा ही किया था। लगा आपको पता?'

आपका भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : यात्रा सावधानी से करें, परिश्रम का फल मिलेगा, कारोबार में नरमी, लाभ अच्छा, व्यय यथार्थ होगा, घरेलू चिन्ता बनेगी, सरकारी कामों में सफलता, विशेष दौड़धूप से परेशानी।

वृष : वाद-विवाद से बचें, कारोबार मध्यम, यात्रा की आशा है, नए काम से परेशानी, आर्थिक स्थिति डांवाडोल, लाभ खर्च बराबर, शुभफल बढ़ेंगें, कामों में सफलता मिलने से खुशी।

मिथुन : खर्चा काफी होगा और लाभ देर से मिलेगा, यात्रा सफल रहेगी, धार्मिक कामों पर व्यय, सज्जनों के परामर्श से लाभ, रुकावटों पर विजय, व्यर्थ का विरोध या गुस्सा, कोई विशेष सफलता मिलेगी।

कर्क : दौड़धूप अधिक एवं सफलता भी मिलती रहेगी, व्यय अधिक होगा, कारोबार सुधरेगा पर लाभ देर से मिलेगा, मनोरंजन आदि पर व्यय, यात्रा में सावधान रहें, घरेलू परेशानी होगी।

सिंह : व्यय अधिक और लाभ आशा से कम, कारोबार मध्यम चलेगा, हालात सुधरेंगें और धन वृद्धि भी होगी, अच्छे लोगों की राय से काम बन जाएंगे, नई योजना पर विचार, दौड़धूप अधिक पर सफलता कम।

कन्या : कारोबार में सुधार, बकाया रकम मिलेगी, कोई खास उलझन सुलझेगी, राज-काज में सफलता, विशेष परिश्रम करना पड़ेगा, शत्रु एवं रोग पर विजय, शुभफलों में वृद्धि, ऋण से कुछ राहत मिलेगी।

तुला : लाभ खर्च बराबर, कारोबार दृढ़ परन्तु बेचेनी बिना कारण ही रहेगी, कामध-न्धों से लाभ बढ़ेगा, रुका पैसा मिल सकता है, काम भी बनते नज़र आएंगे, सरकारी कामों में सफलता।

वृश्चिक : हालात सुधरेंगे, कामों में सफलता एवं लाभ भी बढ़ेगा, मानसिक परेशानी एवं स्वभाव में तेजी रहेगी, बड़े लोगों की राय से लाभ होगा, कारोबार बढ़ेगा, मिश्रित फल मिलेंगे, दौड़धूप अधिक।

धनु : कहीं से शुभ सन्देश, यात्रा का प्रोग्राम बनेगा, लाभ अच्छा होगा, स्थायी कामधन्धों में सुधार, आर्थिक स्थिति पर नियत्रंण रहेगा, व्यय यथार्थ, नातेदारों से मेल जोल, मेहनत सफल, लाभ के भी चांस मिलेंगें।

मकर : रुकावटें तो आएंगी पर सफलता मिलती रहेगी, लाभ खर्च बराबर, स्थायी कामधन्धों में सुधार, नया काम शुरू न करें, यात्रा में सुख, परिश्रम काफी रहेगा, कोई बिगड़ा या रुका काम चल पड़ेगा।

कुम्भ : लाभ बढ़ेगा, यात्रा सफल, हालात पहले से ठीक होंगे, राजकीय कामों पर व्यय, कारोबार अच्छा चलेगा, व्यय यथार्थ, आय में वृद्धि, काम बन जाएंगे, दौड़धूप अधिक एवं सफलता भी रहेगी।

मीन : कामकाज से लाभ सामान्य, सेहत नरम, खर्च बढ़ेगा, बनते कामों में अड़चन फिर भी मित्र सहयोग से सफलता पाएंगें, यात्रा सफल, लाभ अच्छा होगा, धार्मिक कामों में रूचि।

सच्ची मित्रता

—श्री कृष्ण

बहुत पुरानी बात है सिसली द्वीप के सेराक्यूज़ नामक नगर में दो मित्र रहते थे जिनका नाम डामन और पेथियस था डामन और पेथियस इतने पक्के मित्र थे जैसे दूध और चीनी।

उन दिनों सिसली पर एक अत्यन्त क्रूर तथा धूर्त राजा का शासन था। उसका नाम डायनोसस था। डायनोसस इतना क्रूर था कि सब लोग उससे बहुत डरते और घृणा करते थे। उसके भय से लोग उसका नाम तक लेने में भी कांप उठते थे। उसके आतंक को दिन-प्रतिदिन बढ़ते देख एक दिन डामन से न रहा गया और उसने राजा की निर्दयता और दुष्टता की निन्दा की। यह बात डायनोसस तक पहुंच गयी। वह आगबबूला हो गया और आज्ञा दी कि डामन को बन्दी बना लिया जाये। हुक्म की देर थी, डामन को पकड़कर कारावास में डाल दिया गया। उस पर राजद्रोह का अपराध लगाया गया और मृत्युदण्ड का हुक्म हुआ।

पेथियस ने जब अपने मित्र के मृत्युदण्ड की बात सुनी तो वह दौड़ता हुआ राजदरबार में गया कि अपने मित्र डामन की वकालत करे। जिस समय वह वहां पहुंचा, डामन राजा से विनती कर रहा था, ''राजन् ! आपने मुझे मृत्यु की सजा दी है और मैं मरने को तैयार भी हूं, परन्तु एक विनती है—मुझे अपने बीवी-बच्चों से अन्तिम बार मिलने की छुट्टी दी जाये। वे दूर—समुद्र-पार रहते हैं।''

इस पर क्रूर राजा ने इनकार करते हुए

कहा, ''विद्रोही ! क्या तुम मुझे इतना मूर्ख समझते हो कि मैं तुम्हें इस प्रकार धोखा देकर भाग जाने का मौका दे दूंगा। यह कभी नहीं हो सकता ! हां, अगर तुम्हारे वापस लौटने तक तुम्हारे बदले कोई दूसरा आदमी जेल में रहने को तैयार हो तो तुम्हें पन्द्रह दिन के लिए घर जाने की आज्ञा मिल सकती है। लेकिन यदि तुम समय पर न लौटे तो उस आदमी को ही फांसी दे दी जायेगी।''

राजा ने सोचा कि किसी के लिए कोई क्यों अपनी जान खतरे में डालेगा। न कोई डामन के बदले में फांसी की सजा भोगने के लिए तैयार होगा और न वह घर जा सकेगा।

लेकिन उसे बड़ा अचरज हुआ जब डामन के मित्र पेथियस ने आगे बढ़कर कहा, ''राजन् ! मैं अपने मित्र की ज़मानत देता हूं। मुझे आपकी शर्त मंजूर है। डामन को अपने बीवी-बच्चों से मिलने की छुट्टी दी जाए। इसके बदले मैं अपने-आपको तब तक जेल में रहने के लिए पेश करता हूं। यदि डामन पन्द्रह दिन तक न लौटे तो आप मुझे फांसी पर चढ़ा दें।''

डायनोसस ने यह सुना तो उसके कान खड़े हो गये। उसने मन में सोचा कि क्या दुनिया में ऐसे भी लोग हैं जो अपने मित्र के लिए इस प्रकार जान पर खेलने को तैयार हैं?

डामन के बन्धन खोल दिये गये और उसके बदले उसके मित्र पेथियस को हथकड़ी और बेड़ी पहनाकर जेल में डाल दिया गया।

दिन बीतने लगे। ज्यों-ज्यों फांसी का दिन पास आने लगा, पेथियस जेल में मन-ही-मन यह मनौती मनाता कि डामन के लौटने में देर हो जाय, ताकि उसके बदले उसे फांसी पर चढ़ा दिया जाय और दुनिया जान ले कि दोस्ती किसे कहते हैं।
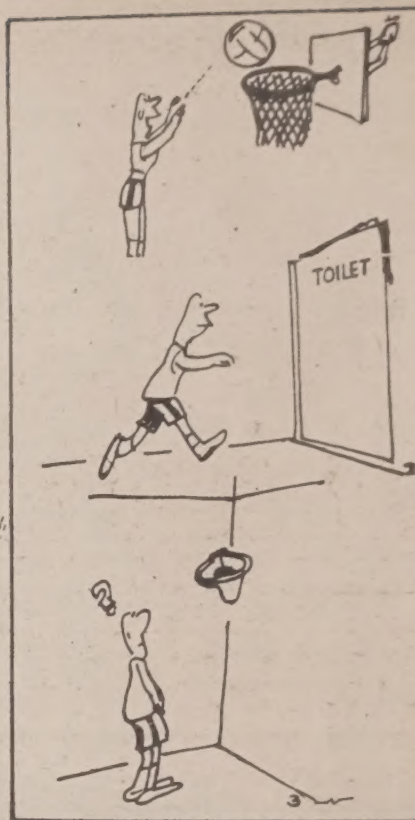
उधर डामन जहाज़ में यह सोचकर अधीर हो रहा था कि कहीं मैं समय पर न पहुंच सका तो मेरे प्यारे दोस्त को फांसी हो जायेगी। हवा विरुद्ध होने के कारण उसका जहाज़ समय पर स्वदेश न पहुंच सका जिससे उसे लौटने में भी देर हो गयी। जब पन्द्रह दिन बीत गये और डामन नहीं लौटा तो राजा ने पेथियस से कहा, ''तेरा दोस्त कितना धोखेबाज निकला ! तुझे फंसाकर खुद भाग गया। अब डामन के बदले तुझे फांसी पर चढ़ना होगा।''

अपने मित्र पर लांछन लगाना पेथियस नहीं सह सका। बोला, ''यह झूठ है। मेरा दोस्त धोखेबाज नहीं है। हवा तेज़ है। हो न हो, उसका जहाज़ तूफान के चक्कर में पड़ गया है। तभी वह समय पर नहीं लौट सका।''

शेष पृष्ठ २९ पर

मोटू, पतलू के जिगरी दुश्मन घसीटा राम की

मोटू पतलू की सदा यह कोशिश रही है कि ईमानदारी से ऊंचा नाम और लाखों रुपया कमायें. डाक्टर झटका आज तक बीमारियों के इलाज के साथ-साथ हर इलाज की बीमारी भी ढूंढ़ते रहे हैं. चेला राम प्राईवेट डिटेक्टिव बन कर दूसरों की मुसीबत अपने सर लेता रहा है. अक्लमन्द उल्लू ने सदा इंसानियत के झंडे गाड़े हैं. इन कलाकारों में घसीटा राम ही एक ऐसा कलाकंद है, जिस ने आज तक सब की जड़ों में तेल दिया है और दूसरों की आँखों में मिर्चें झोंक कर अपनी जेब भरने की तरफ लगा रहा है. रही सही कसर मोटी अक्ल वाले जूडो मास्टर ने पूरी कर दी है, जो अपने बुल्डोजर जैसे जिस्म की ताकत से कोई बड़ा कमाल करके दिखाना चाहता है. लीजिये, इस बार मोटू पतलू ने बेकरी खोली है. आजकल केक, पेस्ट्री और बिस्कुटों की बढ़ती मांग को देखते हुये उन्हें पूर्ण विश्वास है कि ग्राहक उन की दुकान पर टूट पड़ेंगे और धन्धे में वे ईमानदारी से लाँखों रुपया कमा लेंगे.

ग़रीब और अमीर दीवानों की सेवा के लिये.
राजा महाराजाओं के ज़माने की मशहूर दुकान.

मोटू-पतलू पेस्ट्री हाऊस

जिन्हें दो वक्त की रोटी नसीब न होती हो वे हमारी डबल रोटी ख़रीद कर खायें.

बड़े छोटे नेता और अभिनेता हर खुशी और गम के अवसर पर अपनी पार्टियों में हमारे केक काटते हैं.

राखी और गुल्ज़ार ने एक दूसरे से छुटकारा पाने की खुशी में हमारी पेस्ट्रियां बांटीं.

प्रिन्स आफ वेल्ज़ ने एक चुम्बन के बदले में पद्मनी कोल्हपुरे को हमारी पेस्ट्री खिलाई

चौधरी चरण सिंह की खाट खड़ी होने पर राजनारायण ने अपने ऊपर गंगाजल छिड़क कर हमारा केक काटा.

इन लोगों ने जीना हराम कर दिया है. इन का खटोला मैं खड़ा करूंगा. एक तरकीब सूझी है मुझे.

तुम्हारी तरकीब के चक्कर में पिछली बार जेल की हवा खानी पड़ी थी. असली अपराधी के पकड़े जाने पर बड़ी मुश्किल से ज़मानत पर छूटे हैं. अब कोई नई मुसीबत अपने सर मत ले लेना.

वह तो इत्तेफ़ाक की बात थी. हम में समझौता यह हुआ था कि मुझ में अक्ल है, तो मैं अक्ल से काम लूंगा. तुम में ताकत है तो तुम ताकत से काम लोगे. पर ग़लती यह हुई कि तुम ने अक्ल से काम लिया और मैं ने ताकत आज़माई और दोनों ने नुकसान उठाया. इस बार मेरी स्कीम फुलप्रूफ़ है.

मतलब है, वह दाव लगाओगे कि लाठी भी टूट जाएगी और सांप भी नहीं मरेगा?

फिर अक्ल से काम लिया तू ने? वह दाव लगाऊंगा कि लाठी भी नहीं टूटेगी और सांप भी मर जायेगा.
स्कीम यह है कि हम दोनों भेस बदलेंगे. तुम सेठ झुंझुन पिस्तेवाला बनोगे और मैं तुम्हारा मुनीम बनूंगा. समझे आज तुम्हारा बर्थडे है. हम सेठ झुंझुन पिस्तेवाला का बर्थडे बड़ी धूम-धाम से मना रहे हैं. हम ने शहर के बड़े-बड़े लोगों को आमंत्रित किया है. बर्थडे पार्टी में झंडियां लहरायेंगी. गुब्बारे उड़ेंगे. बैंड बजेगा और केक पेस्ट्रियां गाजर मूली की तरह खाई जाएंगी.

गाजर मूली केक पेस्ट्री खायेंगी.
लोग केक पेस्ट्री खायेंगे. मैं फिर कह रहा हूं तुम दिमाग से काम लेना छोड़ दो. और बस सेठ झुंझुन पिस्तेवाला बन जाओ.
चलो बन जाता हूं पिस्तेवाला.

भेस बदल कर घसीटा राम और जूड़ो मास्टर मोटू-पतलू पेस्ट्री हाऊस पहुंच गये.
जैसे मैं ने समझाया है, वैसे ही करते रहना और बहुत कम बोलना. वर्ना तुम्हारी अक्ल बना बनाया बिगाड़ देगी.

पधारिये श्रीमान, हम आप की क्या सेवा कर सकते हैं?
यह सेठ झुंझुन पिस्तेवाला हैं और मैं इनका मुनीम हूं चोखे लाल. आज इनका बर्थडे है. हमें बढ़िया किस्म की पेस्ट्रियां चाहियें.
इतना बढ़िया माल है हमारा कि हमारी पेस्ट्रियों की तो सारे शहर में धूम मची है.
क्या भाव लगाया है?
बारह रुपये दर्जन.
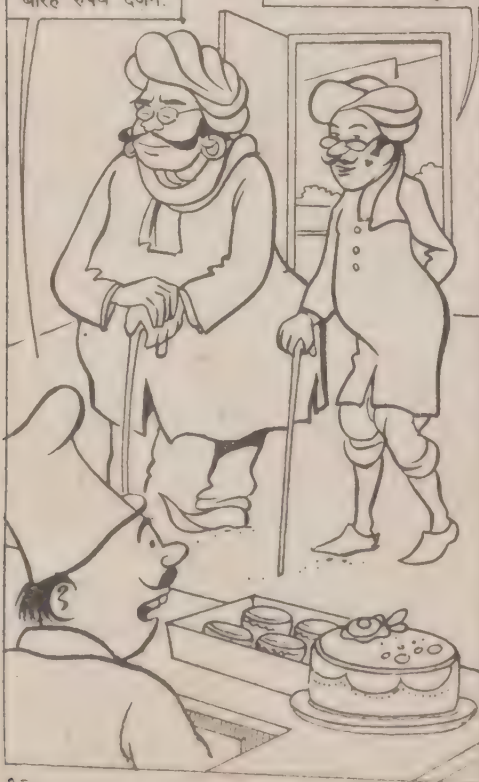
कहिये कितनी दूं?
बीस हजार!
बीस हज़ार— !

कोई मामूली सेठ नहीं हैं सेठ झुंझुन पिस्तेवाला. काजू, पिस्ते और बादाम के बड़े-बड़े बाग हैं इनके. वकीलों, प्रोफैसरों, नेताओं और कितने ही बड़े-बड़े नेताओं को बुलाया है इन्होंने अपनी बर्थडे पार्टी में. अगर आप बीस हज़ार पेस्ट्रियां सप्लाई नहीं कर सकते तो साफ़-साफ़ बताईये. ऐसा न हो कि भरी पार्टी में इन की बदनामी हो जाये
क्या कह रहे हो मुनीम जी. मोटू-पतलू पेस्ट्री हाऊस की नाक कट जाएगी अगर ऐसा हो गया तो. पर इतना बड़ा आर्डर पूरा करने के लिये हमें थोड़ा समय चाहिये.
कितना समय चाहिये. आज शाम को सात बजे पार्टी है आप हमें छः बजे पेस्ट्रियां दे दीजिये
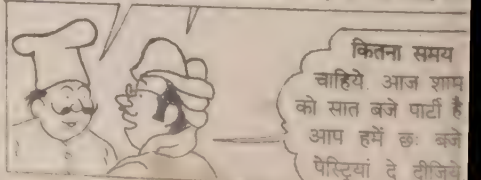
जी बहुत अच्छा दे देंगे. हम पैसे कम नहीं करा रहे हैं, पर यह ध्यान रखिये कि पेस्ट्रियां बढ़िया हों.
एक दम बढ़ियां होंगी मुनीम जी, और ठीक छः बजे तैयार मिलेंगी.
एक बात और. आप पांच-पांच हज़ार पेस्ट्रियों के चार पैकेट बना देना. उठाने में आसानी रहेगी. मैं ठीक छः बजे अपने आदमी ले कर आऊंगा और पैकेट ले जाऊंगा.
हां, एक बात और. हम ज़रा शोपिंग करने जा रहे हैं. आप के यहां हमारा कोई फोन आये तो अटेंड कर लेना. हम ने लोगों को कह दिया है, आप हमारे घर के से आदमी हैं.
घर के से आदमी तो है ही. आप चिंता न करें.
मुनीम जी और सेठ जी के जाने के बाद.
कितना बड़ा आर्डर मिला है. बेकरी के काम में तो अपने वारे-न्यारे हो जायेंगे.
इतनी पेस्ट्रियां इतने थोड़े समय में कैसे तैयार होंगी ?
सारी लेबर के साथ हम भी पेस्ट्रियां बनाने में लग जाऐंगे. जितनी पेस्ट्रियां कम पड़ेंगी वे दूसरी बेकरियों से खरीद लेंगे. चाहे दाम के दाम पर माल सप्लाई करना पड़े पर हम अपनी साख पर आंच नहीं आने देंगे.
मोटू-पतलू की दुकान से निकल कर भेस बदले घसीटा राम और जूड़ो मास्टर ने एक प्राईवेट टैक्सी ली.
और एक कपड़े वाले की दुकान पर जा पहुंचे.
रास० कुमार सूटिंग
सेठ जी के लिये सूट का बढ़िया सा कपड़ा दिखाइये.
यह देखिये एक्सपोर्ट क्वालिटी है. एक हज़ार रुपये में सूट लैंग्थ पड़ेगी.
ठीक है, इसके चारों डिज़ाइनों में से एक-एक सूट लैंग्थ दे दीजिये. और अब ज़रा कमीज़ों के बढ़िया कपड़े दिखाइये.
ज़रा मैं फ़ोन कर लूं फ़ैक्ट्री.
हैल्लो, हम मोटू पतलू पेस्ट्री हाऊस से बोल रहे हैं. क्या कहा ? आवाज़ साफ़ नहीं आ रही है??
ठीक है, इन अलग-अलग डिज़ाईनों में छः कमीज़ों के पीस दे दीजिये. यह एक हज़ार के हुये ना ?
जी हां.
ठीक है, कुल मिला कर हुये पांच हज़ार रुपये. इन सब कपड़ों को पांच अलग पैकेटों में बंधवा दीजिये.
सेठ जी बटवा भूल आये हैं, आप पांच हज़ार का बिल बना कर अपना आदमी हमारे साथ भेज दीजिये. हम पैसे सेठ जी की पिस्ता फ़ैक्ट्री पहुंच कर दे देंगे.

आप बात कीजिये. आंवाज़ कुछ साफ़ नहीं आ रही है.
क्या बात करनी है?
पूछ लो चार पैकेट बनाने को ही कहा था ना
हैल्लो, क्या कहा पेस्ट्री हाऊस से बोल रहे हैं? सेठ पिस्तावाला कहो. आप पिस्ता हाऊस से बोल रहे हैं न
टैलिफ़ोन में आवाज़ साफ़ नहीं आ रही है. छोड़ो पिस्ते बादाम के चक्कर को. कहा, चार पैकेट बनाने को ही कहा था ना?
ओहो, आप सेठ पिस्तावाला की बात कर रहे हैं? हां हां चार पैकेट बनाने को ही कहा था.
उन्हें यह मत बताना कि दो पैकेट की पेस्ट्रियां हमें बाज़ार से ख़रीदनीं पड़ रही हैं.
हां, कह रहे हैं चार पैकेट के लिये ही कहा था.
बात साफ़ हुई. मैं समझा था मैं कुछ भूल कर रहा हूं. अब आप पांच हज़ार का बिल काटिये और पैसे लेने के लिये अपना आदमी हमारे साथ भेज दीजिये.
बहुत अच्छा हजूर.
कपड़े वाले के आदमी को दोनों ने अपने साथ प्राईवेट टैक्सी में बिठाया और चल दिये.
अब उनकी गाड़ी एक जौहरी की दुकान के सामने रुकी.
सेठ झुंझुन पिस्तेवाला को एक अंगूठी दिखाइये.
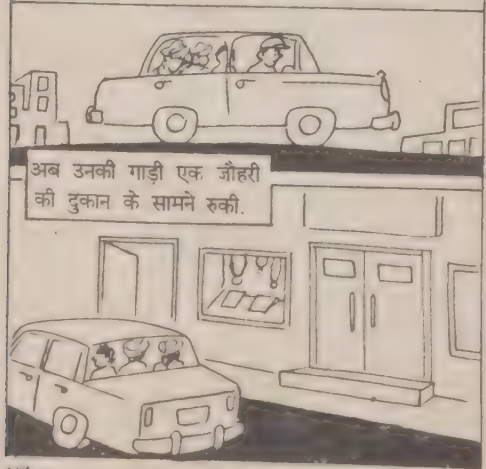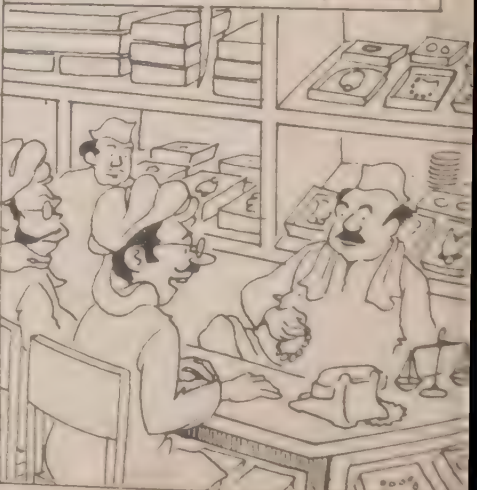
देखिये यह ठीक रहगी ?
नहीं यह तो वहुत भारी है. बिल्कुल हल्की दिखाइये. साथ ही सोने के बटन दिखाइय, एक हल्की सी सोने की ज़ंजीर, कमीज़ के स्टड और कानों की बालियां.
कितने-कितने वज़न की ?
कुल मिला कर सब कोई पांच एक हज़ार रुपये की हो जाएंगी.

देखिये, यह अंगूठी, बटन, स्टड, ज़ंजीर और बालियां कुल मिला कर पांच हज़ार बीस रुपये की बैठ रही हैं.
हम इनके पांच हज़ार ही देंगे. इन्हें चार अलग अलग पैकिटों में पैक करा दीजिये. और बिल बना कर अपना आदमी हमारे साथ कर दीजिये हम फैक्ट्री पहुंच कर रुपये दे देंगे. ज़रा फ़ोन दीजिये, मैं फैक्ट्री फोन कर लूं.

ज़रूर सेठ जी के मुनीम का ही फोन होगा.
टन टन
टन टन

हैल्लो.
हम मोटू-पतलू पेंस्ट्री हाऊस से बोल रहे हैं.

अरे भाइ मैं पिस्ता हाऊस की वात कर रहा हूं
औफ़्फ़ो. आवाज़ साफ़ नहीं आ रही है.

हैल्लो, सेठ पिस्तावाला के यहां से बोल रहे हैं आप ?
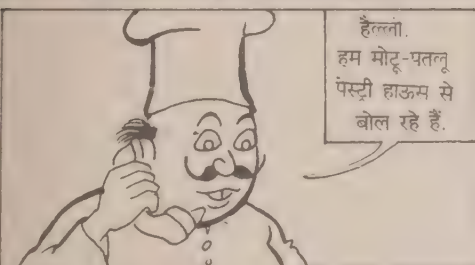
ओह, पिस्तावाला. हां साहब सेठ पिस्तावाला तो अपने ही आदमी हैं.
पूछो. चार अलग-अलग पैकेट बनाने को ही कहा है ना.
चार अलग-अलग पैकेट बनाने को ही कहा है ना ?
हां साहेब चार अलग-अलग पैकेट बनाने को ही कहा है.

मैं कुछ भूल रहा था. सेठ जी का आज मौन व्रत है. वरना मैं इन से ही पूछ लेता. चलो बात साफ़ हुई. चार पैकेट बनाइये, और पैसे लेने के लिये अपने आदमी को हमारे साथ भेज दीजिये.
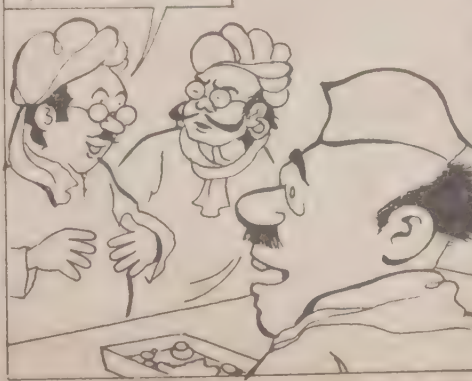
इस प्रकार घमीटा राम ने जौहरी की दुकान से भी उसका आदमी साथ लिया और आगे चल दिये. इसी प्रकार उन्होंने एक दुकान से पांच हज़ार रुपये में फ्रिज खरीदा, और दूसरी दुकान से भाव-ताव करके पांच ही हज़ार में टैलिविज़न खरीदा और उन सब के आदमियों को साथ लेकर व मोटू पतलू पेस्ट्री हाऊस की ओर चल दिये.
पेस्ट्री हाऊस पहुंच कर घमीटा राम ने
को चलता किया
आप तो गाड़ी में घर जाइये. मैं इन
फैक्ट्री से रुपये दिलवाता हूं.
मोटू - पतलू
पेस्ट्री हाऊस
इसमें कोई चाल तो नहीं है?
नहीं चाल कैसी. सेठ झुंझुन वाला की पिस्ते और मेवे वाली फैक्ट्री है.
पिस्ते
बादाम
वाली
पेस्ट्री
दुकान के अन्दर पहुंचे. तो उस समय ठीक छः बजे थे
आइये आइये, पधारिये.
कोई देर तो नहीं लगेगी.
नहीं, नहीं, देर कैसी.
तो फिर इन सब को पांच-पांच हज़ार दे दीजिये.
अभी लीजिये, तशरीफ़ रखिये, अभी देता हूं.
देखा, अब तो कोई डबका नहीं है तुम्हारे मन में.
अरे साहेब डबका कैसा. आप जैसे सेठों की तो
ही और
तो फिर यहां बैंच पर बैठ जाइये. मैनेजर साहब तुम सब को अभी पांच-पांच हज़ार दे देंगे.
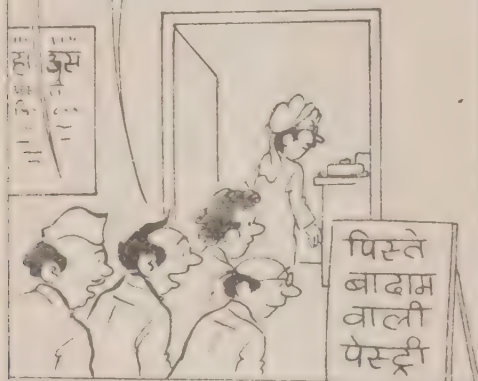
वह आदमी वहां आराम से बैंच पर बैठ गये और घसीटा राम आँख बचा कर खिसक गया.

यह घसीटा राम कहां भागा जा रहा है?

अब यह सब एक दूसरे का सर फोड़ेंगे. तो यहां से नौ दो ग्यारह हो जा मोतियों वाले. बीस साल में यह तेरा पहला तजुर्बा कामयाब हुआ है.
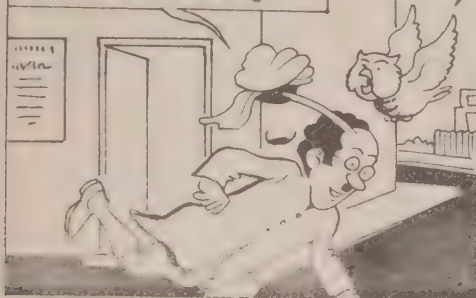
पांच-पांच हज़ार के बंडल भी बहुत बड़े बने हैं. तुम इनके लिये कोई टैम्पो या रेड़ा लाये हो अपने साथ?

पांच-पांच हज़ार नोटों के लिये टैम्पो या रेड़ा?

यह सम्भालो पांच-पांच हज़ार के पैकेट. और निकालो पांच चौका बीस हज़ार रुपये.

रुपये निकालें! रुपये लेने तो हम आये हैं.

किस बात के रुपये मांग रहे हो तुम?

इन पेस्ट्रियों के, तुम्हारे सेठ ने इन का आर्डर दिया था.

तुम्हारे सेठ ने हमारी दुकानों से माल खरीदा था और कहा था हमारे साथ चल कर पांच-पांच हज़ार रुपया ले लो और तुम उल्टा हम से रुपये मांग रहे हो.

अरे क्या हो गया?

दो आदमी सेठ और मुनीम बन कर हमें सब को धोखा दे गये.

उन्होंने हमारी दुकान से कपड़ा, जेवर, टैलिविजन और फ्रिज ख़रीदा था.

नया फ्रिज और टैलिविजन तो अभी-अभी घसीटा राम के घर में देखा है.

उनमें से एक आदमी लम्बी नाक वाला था!

वह सेठ का मुनीम था.

वह भेस बदले हुये घसीटा राम था. मैं ने अभी उसे यहां से निकल कर सड़क पर दौड़ते देखा है.

यह है उसके घर का पता.

अरे केवल पते से क्या होगा. वह हमारा पत्ता काट गया. यह तो उसकी गर्दन दबोच कर अपना माल वसूल कर लेंगे पर हमारी बीस हज़ार पेस्ट्रियों का क्या बनेगा?

उधर अपने घर पर घसीटा राम खुश था
देखा, अपने दिमाग़ से काम ले कर मैं ने सब को कैसा उल्लू बनाया है. यह सब इस लिये हुआ कि तुम ने मौन व्रत रख रखा था. अगर तुम ज़रा भी बोल पड़ते तो सब गुड़ गोबर हो जाता.
देखूं दरवाजा खोल कर कौन है.
खट खट . . . खट . . .
खट . . . ?
यही है.
पकड़ लो इसे.
बोटियां नोच डालो.
पुलिस के हवाले कर दो.
पुलिस क्या करेगी. पहले हम इसका आटा गूंधेंगे
इसके पेट में करेले का मसाला भरेंगे.
इसकी बोटियों के पकौड़े तल कर चील और कौओं को खिलायेंगे.
जूडो मास्टर तो खाट के नीचे छुप कर बच गया. दुकानदारों ने घसीटा राम के जिस्म को तोड फोड़ कर उसका कबाड़ा कर दिया और अपना सामान छीन कर ले गये, तो अंत में हालत यह थी.
यह ताकत का केस था या अक्ल का, इस बारे में मुझ से कुछ न पूछें मैंने मौन व्रत धारण किया हुआ है.
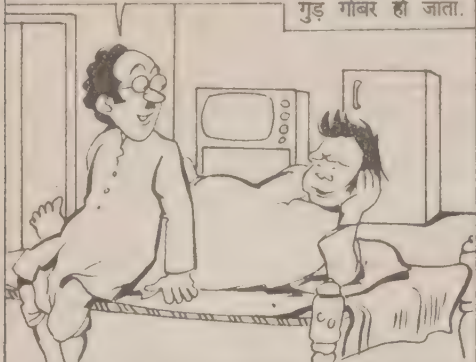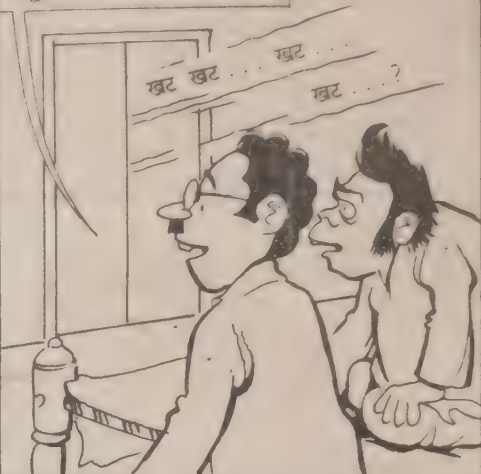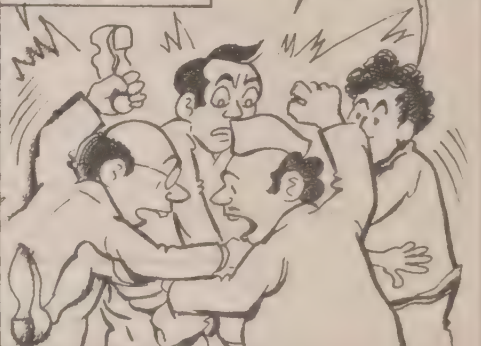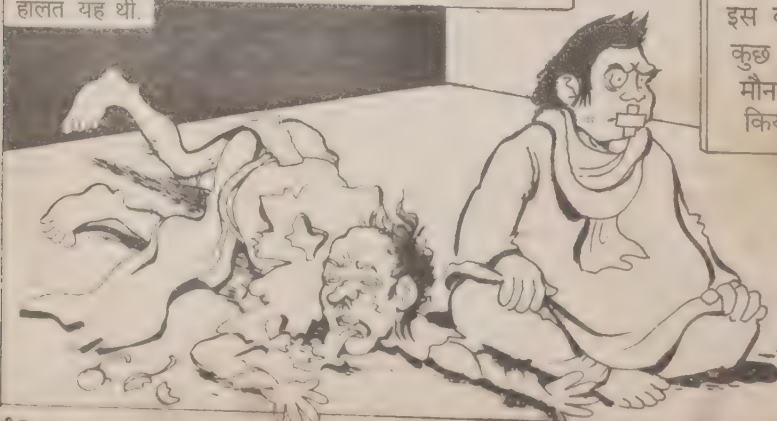
आगामी अंक में

'गस' तुमने अच्छा सोचा, महिन्दर बोला, ''क्यों राजू कैसा ख्याल है?''

परन्तु राजू के चेहरे से उसे अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया। राजू को कोई गुत्थी सुलझाने को दे दो तो वह उस भूखे कुत्ते के समान हो जाता है जिसके सामने हड्डी डाली गई हो और फिर उससे वापिस लेना असम्भव ही है। वह इस कार्य को छोड़ने वाला नहीं था।

हमने जासूसी का काम अभी आरम्भ किया है नम्बर दो, राजू बोला, 'हमें सुलझाने के लिये गुत्थी की आवश्यकता थी और जब कोई अच्छी गुत्थी हाथ आई है तो छोड़ने का सवाल ही नहीं उठता।' फिर भी कुछ ऐसे अनोखे तथ्य हैं जिनके बारे में मैं अभी सोच नहीं पाया हूं।

''जैसे क्या''? महिन्दर ने पूछा।

''ये मेरा अनुमान है कि मि० दूबे ने अपने आप को अलमारी में स्वयं ही बन्द किया था।

''अलमारी में अपने को स्वयं बन्द किया''। गस ने अत्यन्त हैरानी से पूछा, ''भला ऐसा कोई क्यों करेगा?''

''ऐसा तुम्हें क्यों लगा?'' महिन्दर ने पूछा, मेरा मतलब वे बन्द थे और वाकई लगता था कि किसी ने उनसे दुर्वव्यवहार किया हो।

''नकली सबूत,'' हमें धोखा देने के लिये, राजू बोला। इसकी ओर ध्यान दो और अपनी सोचने की शक्ति काम में लाओ। मि० दुबे ने कहा था कि वह अलमारी में लगभग डेढ़ घंटे से बन्द हैं, कहा था कि नहीं।

''हाँ। हाँ। कहा था।''

''जिस बीच उन्होंने दरवाजे पर हाथ पटके तथा आवाज़ करने की कोशिश की तथा साथ साथ वे सहायता के लिये चिल्लाये भी, अब ये बताओ ऐसी हालत में सबसे पहले वह व्यक्ति क्या करेगा?

''वह अपना चश्मा ठीक करेगा, गस बोला नहीं तो अंधेरे के कारण चश्मा उतार कर जेब में रख लेगा। वह डेढ़ घंटे तक उसे एक कान में लटका नहीं छोड़ेगा।

मेरे ख्याल से गस तुम ठीक कह रहे हो, श्याम अपना सर खुजलाते हुए बोला, और अपनी टाई भी ठीक करेगा। राजू तुम ठीक कहते हो, उन्होंने चश्मा और टाई हमें दिखाने के लिये ही उलटे सीधे किये होंगे ताकि हम समझें कि उन पर किसी ने हमला किया है।

हमेशा सारे तथ्यों की समीक्षा करने के बाद ही किसी नतीजे पर पहुँचना चाहिये, राजू बोला। मि० दूबे ने हमें किसी हद तक पूर्ण रूप से सचेत कर दिया था कि उन पर हमला हुआ, केवल एक वजह से मेरा ध्यान उस ओर गया। आओ दोनों मेरे पास आओ। मेरी कुर्सी और मेज़ की लकड़ी को छू कर बताओ दोनों में क्या फर्क है। दोनों लड़कों ने तुरन्त राजू की कुर्सी तथा मेज़ की लकड़ी को छुआ। वे तुरन्त बोले तुम कुर्सी पर बैठे हो इसलिये इसकी लकड़ी गरम है, जब कि मेज़ की ठंडी है।

राजू ने सिर हिलाया और बोला उस दिन जब मि० दूबे के आफिस में मैंने उनकी कुर्सी को उठाने के लिये छुआ था तो वह गरम थी मानों कोई कुछ मिनट पहले तक उस पर बैठा

हो। फिर मैंने चश्मे और टाई के बारे में सोचा तो मेरी समझ में बात आ गई।

मि दूबे ने हमारी कार को गेट के अन्दर घुसते देखा होगा, फिर जब हम कार से बाहर निकले, तो उन्होंने जल्दी से अपनी कुर्सी को लुढ़का दिया और स्वयं अलमारी में घुसकर अपना चश्मा और टाई उलट पुलट कर दिये। फिर वे बैठ कर मदद की पुकार करने लगे। वे शायद दो या तीन मिनट ही अलमारी में रहे होंगे कि हमने उन्हें निकाल लिया।

कमाल! परन्तु वे ऐसा क्यों करेंगे?

"हमें धोखा देने के लिये" राजू ने उत्तर दिया, ताकि हम समझें की उनके पास जो संदेश था उसकी नकल चोरी हो गई है जब कि उसकी चोरी नहीं हुई है। "तुम्हारा मतलब है मझले कद का चश्मे तथा काली मूँछों वाला कोई आदमी नहीं है?" गस ने पूछा —

'मेरे ख्याल से नहीं। मेरे ख्याल से मि० दूबे ने झूठ-मूठ का हुलिया बताया था। मेरे विचार से केवल तीन बिन्दु ही है। मि० रमा रानधुर ने मि० दूबे से अच्छे पैसे दे कर उनकी संदेश की नकल खरीद ली होगी तथा हमें ये बताने के लिये कि उनकी नकल चोरी हो गई है मि० दूबे ने ये स्कीम बनाई होगी।

'ये वाकई ठीक प्रतीत होती है,' गस बोला। और उसी से पता चलता है कि मि० रानधुर प्लास्टर प्रतिमा को ढूंढ़ते यहाँ पहुंचे। उन्होंने भी संदेश के माध्यम से उन प्रतिमाओं का महत्त्व समझ लिया होगा।

'और वह कह कर गया है कि वह फिर आयेगा', श्याम बोला, हो सकता है अपने साथ वह अपने कुछ गुंडे साथी ले कर आये। मानलो उसने विश्वास न किया हो कि हमें सचमुच ही अगस्टस की प्रतिमा का पता नहीं है। दूर के देशों में पूछताछ करने के लिये काफ़ी भयानक तरीके अपनाये जाते हैं।

'तुम अपनी कल्पना से घबरा रहे हो' महिन्दर, यहाँ ऐसा नहीं होता। ये पिछड़ा देश नहीं है। मैंने यहाँ किसी से पूछताछ करने के लिये ताड़ित किये जाने के विषय में
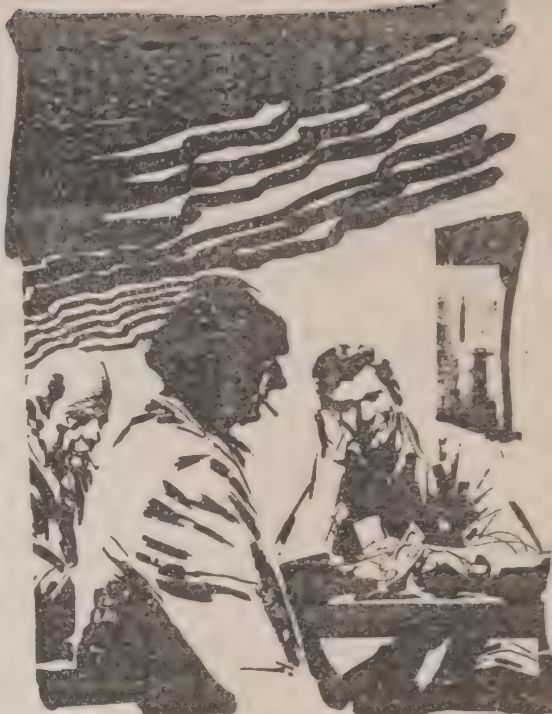
नहीं सुना! प्राचीनकाल की बात और है।'

"हमेशा हर काम की कोई न कोई तो पहल करता ही है" महिन्दर बुदबुदाया।

'गस' कुछ कहने ही वाला था कि फोन की घंटी बज उठी। राजू ने फ़ोन उठाया, माथुर कबाड़ी घर, राजू माथुर बोल रहा हूँ।

मैं मि० पीटर सन बोल रही हूँ मैं मालिब बीच पर रहती हूँ मुझे एक शिकायत है, मैं कल तुम्हारे कबाड़ी घर से दो प्लास्टर की प्रतिमाऐं बाग़ में सजांने को ख़रीद कर ले गई थी।

"हां मि० पीटरसन, राजू ने अचानक इन्टरव्यू लेते हुए कहा।

हाँ। वे बहुत ही धूल भरी थीं, मैंने उसे बाग़ में पाइप से धोने के लिये रखा, वे टूट टूट कर गिरने लगीं, उसका नाक और कान टूट गया। मेरे पति का कहना है कि ये निरे प्लास्टर की हैं, इन्हें केवल घर के भीतर ही रखा जा सकता है। बाहर मौसम के कारण वे बरबाद हो जायेंगी। मैं सोचती हूँ कि आपको मेरे पैसे वापिस करने चाहियें क्योंकि आप ने बाग की सजावट के लिये इन्हें बेचा था।

"मुझे बहुत खेद है मि० पीटरसन, राजू नम्रता

से बोला मेरे ख्याल से हमें प्लास्टर पर पानी के प्रभाव का ध्यान नहीं रहा। क्या आप बता सकती हैं आप कौन-कौन सी प्रतिमा ले गई थीं। राजू ने पूछा। मुझे पक्का नहीं पता, वे बाहर रखी हैं, परन्तु मेरे ख्याल से एक अगस्टस कुछ है, मैं कल उन्हें वापिस ले आऊँगी।

'क्षमा कीजिये, मि० पीटरसन, राजू सीधे बैठते हुए बोला, हम आकर उन्हें ले जायेंगे ताकि आप को परेशानी न हो यदि आप हमें अपना पता बता दें। हम आज ही दोपहर या शाम को किसी समय पहुँच जायेंगे।

उसने जल्दी जल्दी मि० पीटरसन का बताया पता लिखा और फोन बन्द कर दिया।

हमें अगस्टस आफ पोलैंड का पता चल गया है। उसने गस और महिन्दर से कहा। जैसे ही हँस छोटी ट्रक ले कर आयेगा हम जा कर उसे ले आयेंगे।

''बहुत बढ़िया !' महिन्दर बोला, आशा है हम अगस्टस को तीन बिन्दु द्वारा पकड़े जाने से पहले पा लेंगे।'

काली मूछों वाले का आगमन

इसी बीच श्याम लाइब्रेरी पहुँच गया। यहाँ वह थोड़े समय का काम किया करता था। जैसे ही वह अन्दर घुसा लाइब्रेरी में बैठी मि० बिन्दु ने उसे देखा।

अरे हैलो ! श्याम मुझे मालूम नहीं था आज तुम्हारा काम का दिन है।

आज काम का दिन नहीं है। आज मैं कुछ खोज करने आया हूँ। ओह ! और मैं समझी थी कि तुम मेरी मदद के लिये आये हो मि० बिन्दु ने मुस्कुराते हुए कहा। आज काम बहुत ही था, इतनी किताबें वापिस खानों में रखने को पड़ी है, क्या कुछ समय हमें दे सकोगे श्याम ?

'ज़रूर मिस बिन्दु' श्याम बोला।

मि० बिन्दू ने सबसे पहले कुछ महत्त्वपूर्ण किताबों की जिल्द के कवर चिपकाने को दिये। श्याम उन्हें पीछे के स्टोर रूम में ले गया और पक्के चिपकने वाले टेप से उनकी मरम्मत की, जब उसने ये काम समाप्त कर लिया तो मिस

— शेष पृष्ठ २४ पर

बन्द करो बकवास
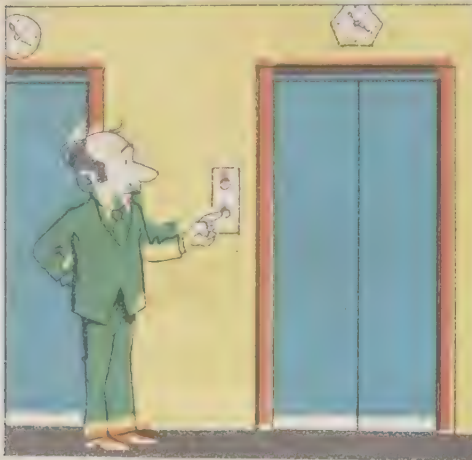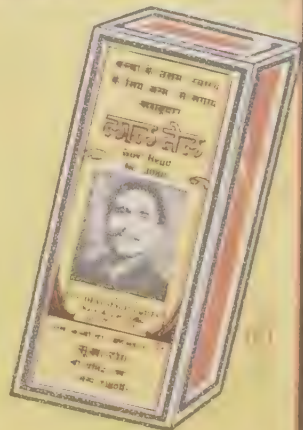
बन्द करो बकवास ! तुम मेरी जिन्दगी एपार्टमैंटस वालों के पास किसी के पास टैलीफोन नहीं है। सब कॉल करने यहीं आ मरते हो। अगर मैं तुम्हारी ही बिल्डिंग में आ गया तो मेरा दीवाला ही निकाल दोगे।

लिफ़्ट के मज़े

पृष्ठ २१ से आगे
बिन्दु ने उसे बहुत किताबें वापिस उनके स्थान पर रखने को कहा। उसने सब को एक-एक करके ठिकाने से रख दिया। फिर उसका ध्यान पढ़ने वाले कमरे की मेज़ पर पड़ी किताबों पर पड़ा. श्याम ने उन्हें इकट्ठा किया और जैसे उसकी दृष्टि इनमें से एक पर पड़ी वह उछल पड़ा, उसका शीर्षक था प्रसिद्ध रत्न तथा उनकी कहानियाँ। ये ही किताब देखने तो वह लाइब्रेरी आया था।

'कुछ गड़बड़ है? श्याम,' मिस बिन्दु ने पूछा।

श्याम ने सिर हिलाया तथा किताब ला कर मिस बिन्दु को दिखाई। कैसे इत्तफाक है कि मैं इसी किताब में कुछ पढ़ने आया था और ये पहले ही मेज़ पर पड़ी है।

'भगवान' मिस बिन्दु ने शीर्षक पढ़ कर कहा ये ऐसी किताब है जिसे वर्षों से किसी ने हाथ भी नहीं लगाया और आज अचानक ही दिन में दो बार इसे ढूंढ़ते हुए लोग आ गये।

श्याम को ये इत्तफाक नहीं लगा।

मेरे ख्याल से आपको ध्यान तो न होगा इसे कैसा आदमी पढ़ रहा था।
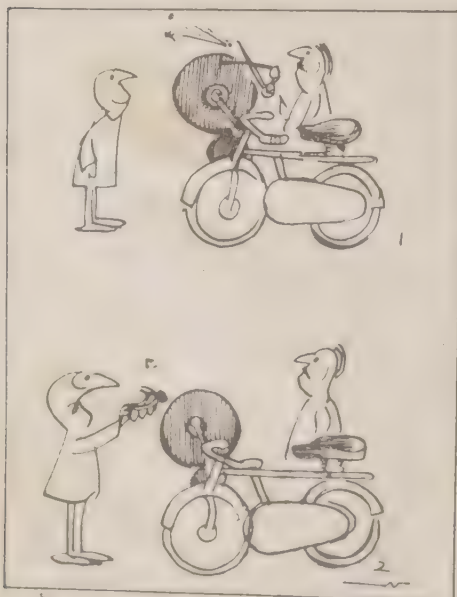
'मुझे उम्मीद नहीं है, दिन में कितने ही लोग आते जाते है उनका धुंधला सा ख्याल ही मेरे दिमाग में रहता है।

'क्या कोई बड़े-बड़े काले चश्मे और काली मूछों वाला मंझले कद का आदमी था!

'क्यों—मिस बिन्दु सोचती सी बोली हाँ, ऐसा ही था तुम्हारे उसका हुलिया बताने से ध्यान आ रहा है, उसकी भारी सी धीमी आवाज थी! तुम्हें कैसे पता चला 'मैंने उसके विषय में किसी से सुना था, श्याम बोला, यदि मेरे लिये और कोई काम न हो तो—

मिस बिन्दु ने न में सिर हिलाया और श्याम जल्दी से पढ़ने की मेज की ओर बढ़ गया। काली मूछों वाला यहाँ आया है इसका मतलब उसे भी सूराग मिल गया है। वह बैठकर किताब पढ़ने लगा, किताब संसार के भिन्न भिन्न रत्नों के विषय में जानकारी तथा उनकी खोज की कहानियों से भरी थी। अन्त में कुछ देर 'होप हीरे की कहानी जिससे बहुत लोगों को दुरभाग्य प्राप्त हुआ के विषय में पढ़ने के बाद उसे वह मिल गया जो वह पढ़ना चाह रहा था' चमकती आँख के विषय के लेख को वह पढ़ने लगा'

'चमकती आँख' एक कबूतर के अंडे की बराबर का मानक है इसका रंग गहरा लाल है, किसी को इसकी उत्पति या मिलने के विषय में कुछ भी पता नहीं है परन्तु चीन भारत तथा तिब्बत में ये कई शताब्दियों स प्रसिद्ध है। ये राजा, महाराजाओं, सम्राटों, महारानियों तथा बड़े बड़े धनवान् व्यापारियों के पास रह चुका है इसे कई बार चुराया जा चुका है और इसके कई मालिकों को इसके लिये मार भी डाला गया है। कुछ और इसके मालिक आपस की लड़ाई में हार गये तथा अन्य दुखों का सामना करना पड़ा। कम से कम प्रन्द्रह लोग इसके कारण, मर चुके हैं।

'चमकती आँख', आँख के समान शक्ल की है और बहुत मूल्यवान् है। ये इतनी मूल्यवान् नहीं थी जितनी कि समझी जाती थीं. क्योंकि वह भीतर से खोखली है जिसके कारण वह अधूरी हो गई है.

अध्याय का अन्त इन शब्दों से हुआ था। कुछ ऐसे रत्न होते हैं जिन के साथ बदकिस्मती या दुर्भाग्य जुड़ा होता है, एक के बाद एक इनको रखने वाले मर जाते हैं या बहुत [illegible]

हो जाते हैं या फिर बहुत अधिक किसी और प्रकार का नुकसान उठाते हैं। उनके चारों ओर हिंसा मंडराती रहती है तथा वे अपने को सुरक्षित नहीं समझते। इस प्रकार के रत्नों में एक प्रसिद्ध रत्न 'होप डायमंड' है जो एक के बाद एक अपने मालिकों के दुर्भाग्य का कारण बना, जब तक की उसे वाशिंगटन की स्मिथ सोनियन इन्सटीट्यूशन को नहीं दिया गया, चमकती आँख, एक और ऐसा ही मूल्यवान् रत्न है। इसके भी मालिकों में शायद ही कोई हो जिसे दुर्भाग्य का सामना न करना पड़ा हो जब तक कि आखिरकार एक महाराजा ने उसे भारत के एक पहाड़ी गांव फालिश्वर में स्थित एक न्याय के मन्दिर को पश्चाताप के रूप में दान नहीं किया।

उस आदिजाति के लड़ाकू पहाड़ी जाति के लोगों ने अपने न्याय मन्दिर में मूर्ति के माथे पर उसे जड़ा था वहां का स्थानीय विश्वास था कि ये 'चमकती आँख' पाप अथवा पापी को पहिचान लेती है। यदि किसी मुजरिम को इसके सामने लाने पर ये चमक उठती थी तो ये उस गुनाह का सबूत था यदि ये चमकती आँख हल्के रंग की रहती थी तो उसे निर्दोष समझा जाता था.

ये रत्न बहुत ही रहस्यमय तरीके से वहाँ से कई वर्ष पूर्व गायब हो गया था। इस समय वह कहां है किसी को पता नहीं, हालांकि उस मन्दिर के अनुयायियों ने उसे हर प्रकार ढूंढा है। ऐसा समझा जाता है कि उसी मन्दिर के एक दोषी अफसर ने जिसने कोई जुर्म किया था तथा उसे डर था कि चमकती आँख द्वारा उसके जुर्म का भंडा फूट जायेगा, बेच दिया था। बहुत लोगों का ख्याल है कि वह किसी ख़रीदने या चुराने वाले के साथ ही उसके मरने पर उसके साथ ही कहीं दफना दिया गया है।

एक पुरानी-कथा के अनुसार कहा जाता है कि यदि ये चमकती आँख पचास वर्ष तक देखे और छुए बिना छुपा कर रक्खी जाये तो ये दुर्भाग्य लाना बन्द कर देगी बशर्ते इसे खरीदा या दिया गया हो छीना या चुराया न गया हो।

रत्न एकत्रित करने वालों में भी कोई बिरला ही होगा जो इसके शाप से न डरे हालांकि अब इसके पचास वर्ष लगभग पूरे हो चुके हैं।

वाओं! श्याम ने मन ही मन कहा 'चमकती आँख' निश्चय ही ऐसे 'मानक' है जिससे दूर ही रहना चाहिए, चाह अब भले ही पचास वर्ष पूरे हो गये हों। किताब कुछ वर्ष पहले लिखी और छापी गई थी। उसके विचार से अब भी 'चमकती आँख' के चक्कर में पड़ना ठीक नहीं था।

सोच समझ कर किताब उसने उठा कर रख दी फिर उस ने ऐन्साइक्लोपिडिया में पेलिश्वार को ढूंढ़ना आरम्भ किया। उसमें वहां के लोगों के विषय में कुछ पंक्तियां लिखी थीं। जिनके अनुसार पेलिश्वार तथा उसके आस-पास के पहाड़ी इलाके के लोग साधारण तथा लम्बे तथा लड़ाकू किस्म के थे तथा वे लड़ाई में बहुत ही ख़तरनाक हाते हैं और उन्हें नुकसान पहुंचाने वाले से बदला लेने से नहीं चूकते।

इसको पढ़ कर श्याम ने फिर से लम्बी सांस खींची उसने पेलिश्वार तथा मानक विषय में मुख्य बात नोट कर लीं। फिर वह सोचने लगा कि राजू को फोन कर तुरन्त बता दे पर फिर उसने फैसला किया कि अभी राजू भूत-भूत का संपर्क आरम्भ नहीं करेगा इसलिए जा कर ही सब कुछ बताना ज्यादा उचित रहेगा। श्याम

शेष पृष्ठ ५२ पर

२६ जनवरी

दिल्ली वालों के लिये

२६ जनवरी, गणतन्त्र दिवस दिल्ली वालों के लिये अलग से महत्व रखता है। उस महत्व का ज़रा मुलाहिजा फरमायें ।
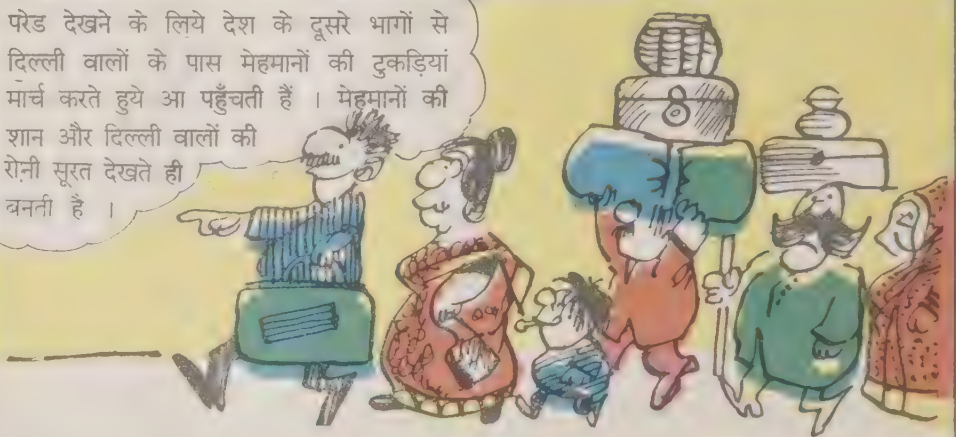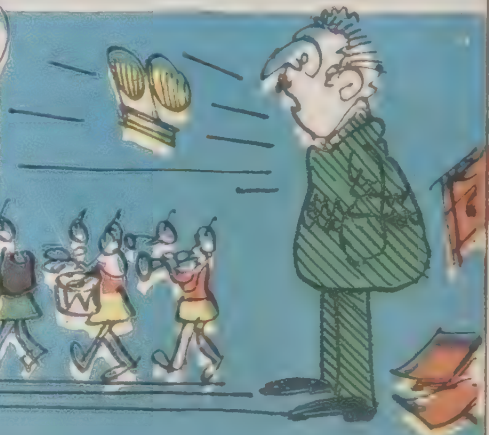
महीने का अन्तिम सप्ताह होता है। जेब कड़क है। मेहमानों की खातिर के लिये पैसे उधार लेने जाते समय ऐसे लगता है जैसे तन्ख्वाह में से पांच हरे-हरे नोट आपको मिग विमानों की तरह सलामी देते हुये उड़कर आंखो से ओझल हो गये हों ।
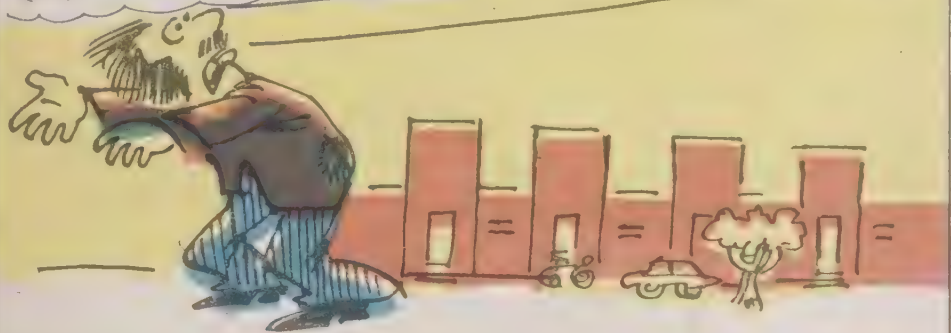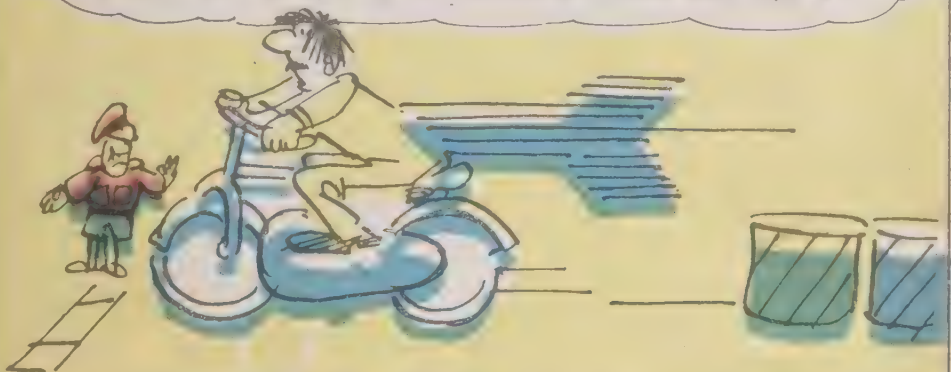
पाकिस्तान के तेज़ गेंदबाज़ आलराऊंडर इमरान खान ने २४ नवंबर १९८० को लाहौर में वेस्टईंडीज के विरुद्ध प्रथम पारी में जब २१वां रन बनाया तो टैस्टों में उनके १००० रन पूरे हुये और साथ ही वे तीसवें ऐसे खिलाड़ियों की श्रेणी में शामिल हुए जिन्होंने टैस्टों में बिना शतक लगाये १००० रन पूरे किये हैं । दूसरी पारी का आगे बढ़ा कर इमरान ने अपना प्रथम टैस्ट शतक बनाया । उन्होंने १२३ रन बनाये । यह उनका तीसवां टैस्ट था । इसके अतिरिक्त इमरान २१वें ऐसे आल राऊंडर है जिन्होंने टैस्ट जीवन में १००० रन व १०० विकटों का दोहरा करिश्मा दिखाया । यह संयोग की बात है कि जिस दिन उन्होंने शतक पूरा किया वह दिन उनका २८ वां जन्म दिवस था ।

बिना शतक
१००० रन बनाने वालों की सूची

नाम	देश	रन	टैस्ट मैच	अर्द्ध-शतक	उच्चतम स्कोर
१. आबिद अली	भारत	१०१८	२९	६	८१
२. ए.सी. बैनरमैन	आ.	११०८	२८	८	९४
३. आर. बारबर	ई.	१०९१	२२	८	९७
४. माइक ब्रीयरली	इं.	१३०१	३५	८	९१
५. एच. बी. कैमरोन	द. आ.	१२३९	२६	१०	९०
६. चेतन चौहान	भारत	१६९६	३४	१३	९३
७. ऐलेन डेविडसन	आ.	१३२८	४४	५	८०
८. ए. डी. गायकवाड	भारत	१०००	१९	६	९१
९. टी. गोडार्ड	द.अ.	१९१८	३१	१४	९९
१०. ग्राहमगूच	इं.	१०२७	२१	८	९९
११. रिचर्ड हैडली	न्यूजी.	१०००	२८	५	८८
१ मरान खान	पाक	१०००	३०	२	५९
१३. इतखाब आलम	पाक	११४०	३६	७	६८
१४. डी. आर. जार्डिन	इं	१०००	१९	८	९८
१५. डब्ल्यू जॉहनसन	आ.	१०००	४५	६	७७
१६. सैयद किरमानी	भारत	११५०	४२	६	८८
१७. के. डी. मैक्के	आ.	१',०७	३७	१३	८९
१८. डेविड मरे	वे. इ.	१९९३	६२	११	९१

१९. बापू नादकर्णी	भारत	१०००	२६	६	७८
२०. ए. डब्ल्यू नोर्स	द.अ.	१५७५	३३	१०	९३
२१. डब्ल्यू ओल्डफील्ड	आ.	१४२७	५४	४	६५
२२. वी. पोलार्ड	न्यूजी.	१०००	३०	६	८१
२३. ईमान रेडपाथ	आ.	१४९१	२७	१०	९७
२४. डब्ल्यू रोडन	इं	१२०२	३४	८	७७
२५. बॉबी सिंम्पसन	आ.	१६५३	२९	१५	९२
२६. डी डी सोलकर	भारत	१०००	२५	७	७७
२७. रुसी सुरती	भारत	१२६३	२६	९	९९
२८. फ्रैंड टिटमस	इं	१४४९	५३	१०	८४
२९. के. वर्डजवर्थ	न्यूजी.	१०१०	५३	५	८०
३०. बासीम बारी	पाक	१०३५	५६	५	८५

(नोटः जिनके नाम के आगे १००० रन है उन्होंने या तो इतने ही रन बनाये या १००० रन पूरा करने के बाद शतक बना लिया इसीलिए आगे के रनों की गिनती शामिल नहीं की गयी.

पृष्ठ–
१० का शेष

आखिर पेथियस को फांसी के तख्ते पर ले जाया गया। उसके चेहरे पर तनिक भी उदासी न थी, उल्टे वह फूल-सा खिला हुआ था।

राजा ने आज्ञा दी, ''रस्सी खींचो !''

जल्लाद रस्सी खींचने चला। बस, एक क्षण की ही देर थी कि इतने में दूर से बड़े ज़ोर की आवाज़ सुनायी दी, ''ठहरो, ठहरो ! मैं आ पहुंचा !''

सब लोग जिधर से आवाज़ आयी थी, उसी ओर देखने लगे। उन्होंने देखा कि घोड़े को सरपट दौड़ाता, धूल से भरा, पागल-सा डामन आया और घोड़े से कूदकर फांसी के तख्ते पर चढ़ पेथियस के गले लिपट गया।

''ईश्वर ने मेरी बात रख ली। मुझे बड़ी खुशी है कि मैं समय पर पहुंच गया और मेरे मित्र के प्राण बच सके।'' फिर राजा से बोला, ''अपने वादे के अनुसार मैं लौट आया हूं, महाराज ! अब आप भी अपना वादा पूरा कीजिए और मेरे दोस्त को मुक्त कर मुझे फांसी दीजिए।''

डामन को मौत के मुंह में जाते देख पेथियस रो पड़ा, ''ईश्वर ने मेरी प्रार्थना नहीं सुनी। हाय, मुझे अपने मित्र के प्राण बचाने का मौका न मिला।''

डामन और पेथियस की ऐसी मित्रता देखकर राजा दंग रह गया। वह बोला, ''तुम दोनों में से एक भी नहीं मरेगा। मैं ऐसी बेजोड़ जोड़ी तोड़ने का पाप नहीं लेना चाहता। गहरी दोस्ती की तुमने ऐसी सच्ची मिसाल दी है कि मैं कभी नहीं भूल सकता। तुम दोनों आज़ाद हो और मैं भी आज से तुम्हारा तीसरा दोस्त हूं।''

विभिन्न राज्यों की कुछ

यथार्थवादी झलकियां

जो वहां का सही रूप पेश करें।

बिहार की झलकी में बिहार पुलिस के दो जवान आंखें फोड़ने की अपनी कला का प्रदर्शन करते दिखाये जायें।

महाराष्ट्र की झलकी में प्याजों की ढेरी हो और किसान आन्दोलन के कुछ आन्दोलनकारी इन प्याजों को दर्शकों पर फेंकते जायें।
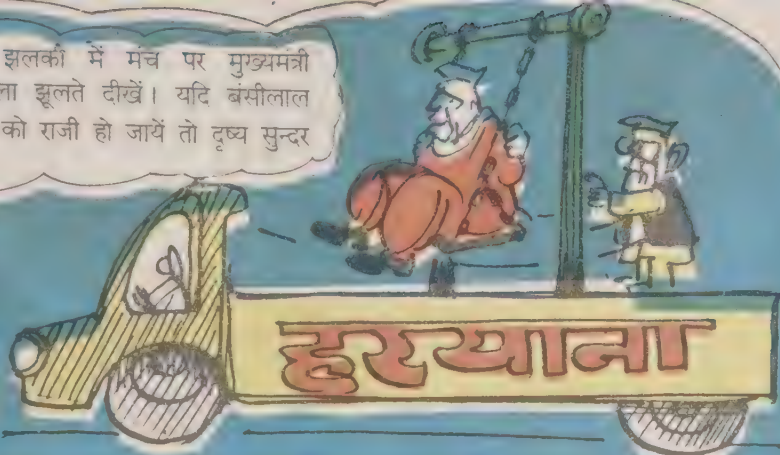
बंगाल बन्द

बंगाल की मार्क्सवादी सरकार स्वयं ही बंद करवाती है। अतः बंगाल की झलकी में बंद बक्सा सा दिखाया जाये। पता ही न लगे कि अन्दर क्या बनाया गया है।

ASSAM
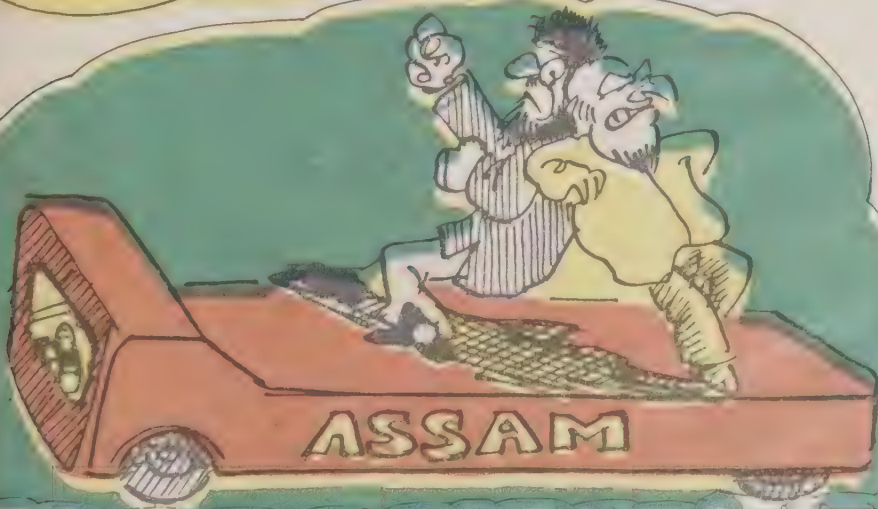
आसाम की झलकी में मंच पर एक आन्दोलनकारी और एक शरणार्थी दिखाये जायें। दोनों धक्का देकर एक दूसरे को नीचे गिराने का प्रयत्न करते हों।

आपस की बातें

चचा वातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

तरसेम राही—मोगा : आजकल प्रत्येक आदमी बुरे काम करने के लिए उतावला क्यों है ?

उ० : क्योंकि आज बुराई का फल वह नहीं है, जो कल था।

चन्द्रभान 'अनाड़ी'—जबलपुर : मैंने आपको जब भी देखा, हँसते धूम मचाते देखा, इसका क्या सीक्रेट है ?

उ० : मामूली सी सीक्रेट है, एक शेर अर्ज है :—

चेहरे का रंग उड़ गया था किसी गम में,
हमने गमों को आज हँसी में उड़ा दिया।

एम०एस०गुजराल—करनाल: डीयर चाचा, इन्सान को अपना फर्ज कब याद आता है ?

उ० : जब फर्ज अदा करने की जरूरत नहीं रह जाती।

सुनील कुमार—भटिंडा : चाचा जी, क्या चाची ने कभी आप पर बेलन फेंका है ? यदि फेंका है,तो बेलन लगा या निशाना चूक गया है ?

उ० : इस प्रश्न के उत्तर में दीवाना का अंक २० . का टाईटिल देखिये।

अरुण मालवीय—वाराणसी : आप बहादुर शाह जफर मार्ग पर रहते हुए भी जफर को भूल गए। 'जिसे ऐश में यादे खुदा न रही', जफर का कलाम है, न कि गालिब का, (दीवाना अंक ११)।

उ० : हमें अपनी इस दीवानगी पर खेद है, और इस बात को खुशी है कि आप दीवाना कितने ध्यान से पढ़ते हैं।

रविन्द्रनाथ सरीन—लुधियाना : इन्सान की नींद कब हराम हो जाती है ?

उ० : इन्सानियत से गिरा काम करने पर।

प्रेमचन्द शर्मा 'अमित'—बम्बई : हमारे न्यायालयों में अपराधी को गीता की सौगन्ध दिलाई जाती है भगवान के न्यायालय में किसकी सौगंध दिलाई जाती होगी ?

उ० : रात ही हमने सपने में देखा, यमदूत हमें पकड़ कर ले गये हैं और भगवान की की अदालत में हम से कहा गया है, 'दीवाना पर हाथ रख कर कहो, जो कहूँगा सच कहूँगा और सच के इलावा कुछ नहीं कहूँगा।'

सतीश परनामी—रिवाड़ी : इन्सान रोता हुआ आता है ओर रुलाता हुआ जाता है ऐसा क्यों ?

उ० : क्योंकि वह इन्सान है। जनता पार्टी नहीं है, जो कि हंसती हुई आई और रोती हुई चली गई।

सुरेश खुराना 'पप्पी'—जींद : मैं आपको अपनी शादी पर बुलाऊं तो आप इन्कार तो नहीं करेंगे ?

उ० : इन्कार की बात छोड़िये आपको हमें बुलाने की जरूरत भी नहीं पड़ेगी। ऐसे शादी कीजिये जैसे दीवाना के एक अंक में फीचर दिया गया था, 'बुरे फंसे—इज्जत बचाने के चक्कर में।

अशोक जौहर, 'नीलम'—देहरादून : आप को खुदा ने नाखून दिये हैं, या नहीं ?

उ० : इस जानकारी के लिए कभी दिल्ली आइये और हमारे नाखून अपनी खोपड़ी पर फेर कर देखिए।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

अब हम छोटे जानवरों का तो जीना ही हराम हो गया है। न वह पेड़ रहे न वह पहले जैसे जंगल। अब तो घास भी नहीं होती ठीक तरह!

यह सब इन्डस्ट्रीयलाइजेशन का परिणाम है। पेड़ कागज और प्लाइवुड शीट बनाने के लिये कट गये।

सिर छुपाने की जगह नहीं रही। हम पेड़ की खोह या घास में बिल बना कर रहने वालों की जिन्दगी ही तबाह हो गयी।
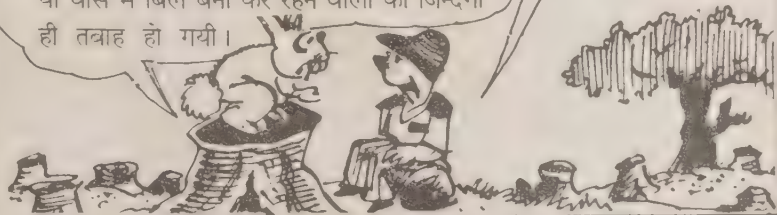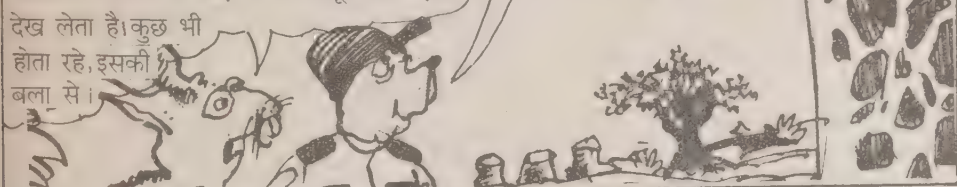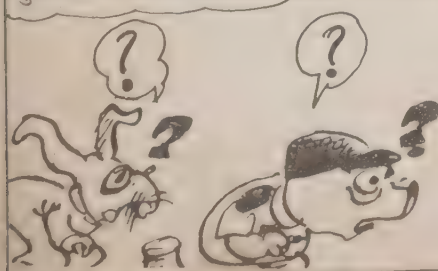
सवाल यह है ?
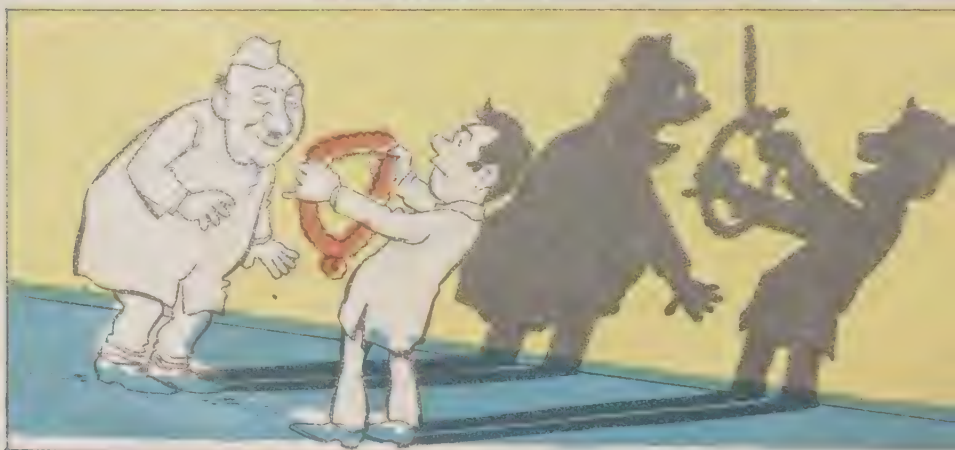
कि जो कुछ हम देखते हैं, क्या वही सत्य होता है? जी नहीं. हकीकत की रोशनी पड़े तो कुछ और ही नज़र आता है. ऐसे ही कुछ नज़ारे यहां देखिये और अपनी दीवानगी में चार चाँद लगाइये.

आगामी अंक में देखिये. नई दीवानगी लिये नये सवाल.
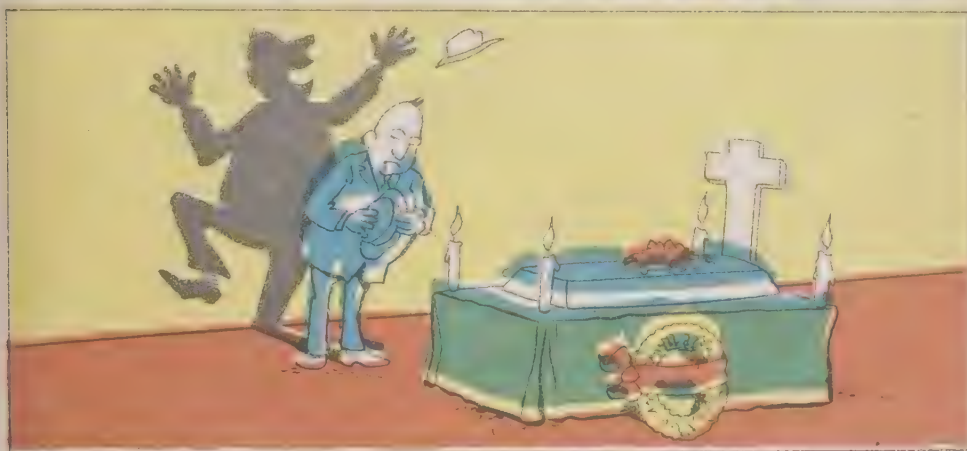
दीवाना वर्ग पहेली
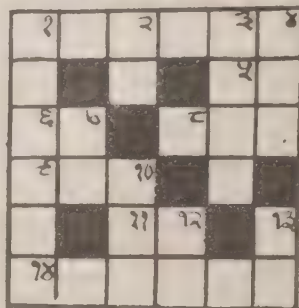
अन्तिम तिथि ७-२-८१

संकेत बायें से दायें

१. परोपकारी को यह आना चाहिए। (३,१,२,)

५. आवारा बालों का समूह (२)

६. गहराई में पीछे लौटने का मार्ग (२)

८. बाद के लोगों के लिए खाना। (३)

९. फल में आधा चारा डाल विश्राम करो। (३)

११. उद्घाटन के अन्त में हुई आवाज। (२)

१४. मेरे तो गिरधर गोपाल इनमें से एक है। (२,१,३)

ऊपर से नीचे

१. चालू भाषा में द्वितीय पति। (३,३

२. डरो नहीं तो यह बैठे रहते हैं ? (२

३. मौत के समय विजय प्राप्त करने वाल अमर। (४)

४. काश्मीर में यहाँ टन-मन के हिसाब से बकरे का माँस मिलता है ? (३)

७. बहराइच में पाया जाने वाला रंग। (२)

१०. मिट्टी के बर्तन पैसे वाले ? (३)

१२. आसमान। (2)

१३. आधे इन्सान को चढ़ा कर तेज किया जा सकता है ? (२)

बोलते अक्षर

पाकिस्तान

आक्टोपस ढलान

अहाता धनुष

२६ जनवरी हंगामा

भाई जी हखबार में २६ जनवरी की बड़ी तारीफ लिखी है। इस दिन क्या हुआ था?
तुझे इतना भी पता नहीं है? इतना बड़ा दिन भारत के इतिहास में कभी नहीं आया था। उस दिन घड़ियों को भी ओवर टायम काम करना पड़ा था। लोगों को दो बार लंच करना पड़ा था। यकीन न हो तो चूहे से पूछ ले।
ऐह
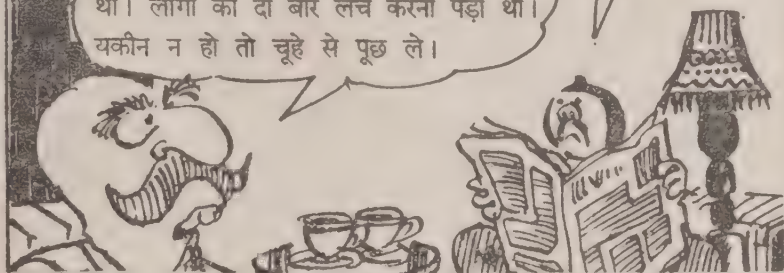
चूहे तू बता २६ जनवरी को क्या हुआ था?
क्या हुआ था? कुछ भी नहीं हुआ। थमारी अभी शादी ही नहीं हुयी तो होगा क्या? ज़्यादा से ज़्यादा जुकाम हो गया होगा। इब जो कुछ हो गया होगा हो गया, हम क्या कर सकते हैं।
लोग और अखबार वाले २६ जनवरी का इतना शोर क्यों मचाते हैं? ज़रूर कुछ न कुछ तो हुआ ही होगा।
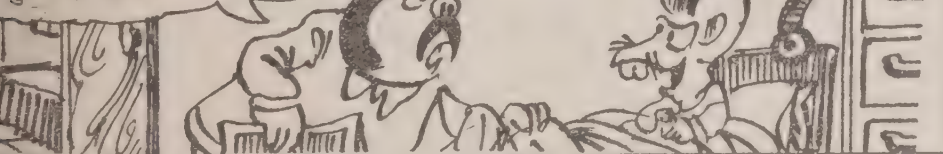
अरे भई अगर मुझे पता होता तो मैं पहले ही तुझे न बता देता। इब बैठया मेरा सिर क्यों खारिया है? जा किसी और से पूछ।
किसी से भी पूछ। सड़क पर इतने आदमी आ जा रहे हैं उनसे पूछ। किसी न किसी को पता होगा।
किससे पूछूं?
अच्छा तो मैं भी कहे देता हूं मैं पता करके आऊंगा। तो तुम्हें नहीं बताऊंगा। ऐटम बम का फार्मूला बता दूंगा लेकिन यह भेद नहीं।
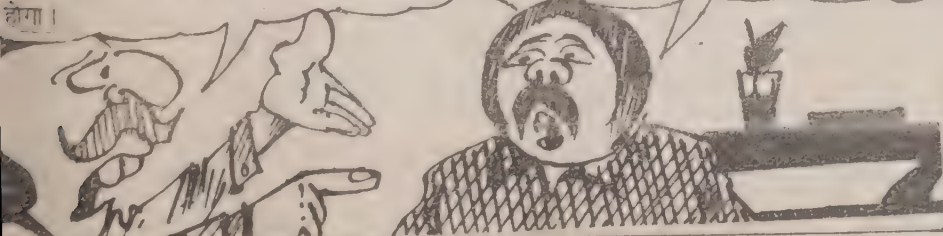
आज पता नहीं सुबह किसका मुंह देखा था। बस में पाकिट कट गयी। दफ्तर में बॉस की झाड़ पड़ी। सुबह से ही सिर में भयंकर दर्द हो रहा है। उस पर रास्ते में फिजूल के टोकने वालों ने तंग कर दिया। कोई रास्ता पूछता है तो कोई टायम! अब के किसी ने टोका तो . . .
भाई साहब क्या आप जानते हैं कि २६ जनव
को क्या हुआ था?
२६ जनवरी को क्या हुआ था
२६ जनवरी को?

यह हुआ था २६ जनवरी को। लगा पता?

अरे! यह क्या हालत बना कर आ रहा है! गर्दन एक तरफ को टेढ़ी हो गई है। आंख बूट पालिश की डिबिया का ढक्कन जैसा हो रहा है चाल लंगड़ाती, बात क्या है?
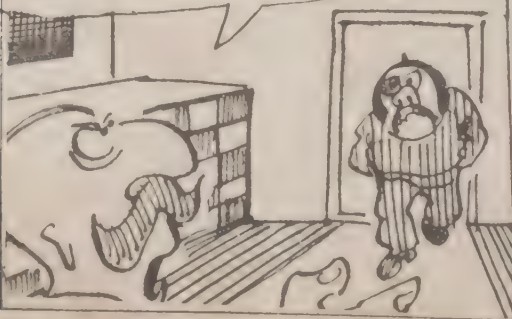
अरे हां, तू तो २६ जनवरी के बारे में पता क
गया था। क्या हुआ उसका? पता लगा
जनवरी को क्या हुआ था?
२६ जनवरी को?
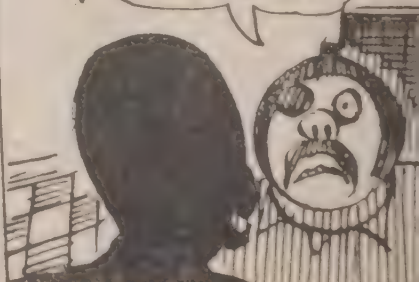
यह हुआ था उस दिन। मैं तो चाहता ही यह था कि थम मेरे से यह सवाल पूछो। इब मेरे जी को जरा ठंड पड़ी।
२६ जनवरी के नाम पर बड़े मुक्के चल रहे हैं। लगता है उस दिन मुहम्मद अली पैदा हुआ था।
ब तो थम दोनों को पता लग ही गया होगा २६ जनवरी का महत्व क्या है? आदमी र खाकर ही सीखता है। इसमें शरमाने वाली ई बात नहीं है। बड़े-बड़े लोगों ने मार खाई
मेरी समझ में तो अब भी कुछ नहीं आया तू क्या कह रहा है? २६ जनवरी के सिर टांग का पता नहीं लगा।
द हो गयी, अब भी कुछ पल्ले नहीं पड़ा? जनवरी यही तो है। थम दोनों के मुंह पर रह-बारह बज रहे हैं। बारह घंटे का दिन हो या और बारह घंटे की रात। २६ जनवरी के न रात का हिसाब पूरा हो गया। अब खिचड़ी ओ और सो जाओ।
हिसाब कहां पूरा हुआ? बारह उसके मुंह पर बजे और बारह मेरे। दोनों का टोटल तो २४ हुआ। बाकी दो कहां हैं?
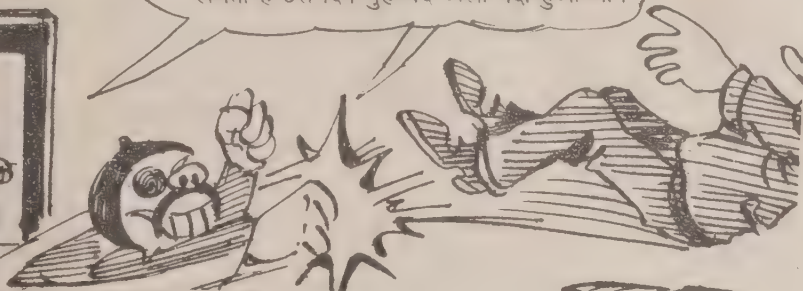
बाकी दो कहां हैं? यह तो अब डिक्शनरी देख कर ही पता लगेगा। मैं २६ जनवरी का ध्यान कर आंखें बन्द कर पन्ना खोलूंगा और देखूंगा कि क्या जवाब निकलता है।
यह तो "ल" वाला पेज खुल गया। लिखता है कि ल से लात। लातों के भूत ब से नहीं मानते। इस का मतबल क्या हो सक है, मुहावरा तो बड़ा अच्छा है। अपने याड़ी अच्छे आदमी हैं। इस मुहावरे का और इन ज़रूर मेल कराना चाहिये तभी बात बनेगी
शब्द कोष
अब देखते हैं कि हिसाब पूरा कैसे नहीं होता है?
चूहे यह क्या कर रिया है? इसका सर फट गया तो कमरे में गोबर की बदबू फैलेगी।
लो मैंने हिसाब पूरा करके दिखा दिया। तेरे मुंह पर अब चौदह बज रहे हैं और पिलपिल के मुंह पर तो बारह बज ही रहे थे। दोनों का टोटल २६ हो गया। इसी खुशी में तीन ताली बजाओ। मैं जनगणमन गाता हूं और थम दोनों देश के सच्चे सिपाहियों की तरह सावधान खड़े रहना।
12
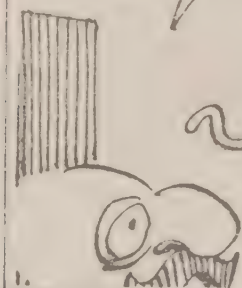
सम्पादक के नाम

दीवाने पत्र

आप रोज ही समाचार पत्रों में पाठकों द्वारा लिखे पत्र पढ़ते हैं । उनमें किसी न किसी चीज का रोना होता है । शिकायतें होती हैं । मान लीजिये आज जिन स्थितियों को लेकर लोग शिकायत पत्र लिखते हैं वह सारे हालात बदल जायें, लोग जैसा चाहते हैं वैसा ही सारे सरकारी विभाग काम करने लगें तो क्या लोग संतुष्ट होंगे ? जी नहीं। लोग फिर भी शिकायत करेंगे। कुछ दीवाने नमूने पेश हैं ।

सम्पादक जी,

हमारी गली में कमेटी वालों ने खूब बत्तियां लगा रखी हैं । कोई बल्ब फ्यूज हो जाता है तो पांच मिनट के अन्दर आकर कर्मचारी नया बल्ब लगा देते हैं । फलस्वरूप गली में रा को दिन जैसा उजाला रहता है ।

कोई ऐसा अंधेरा कोना नहीं है जहां प्रेमी जोड़े बैठ कर प्रेम भरी बातें कर सकें । सरकार प्रेमियों के साथ ऐसा सौतेला व्यवहार क्यों करती है।

रामस्वरूप 'मजनूं'
बस्ती निजामुद्दीन
नयी दिल्ली

सम्पादक जी,

मैं एक गरीब व्यक्ति हूं। मैंने कुछ सुअर पाल रखे हैं । पहले गलियों में कूड़े के ढेर पड़े रहते थे और हमारे सुअर मुफ्त में पल जाते थे। हम गरीब भी उनके सहारे दो रोटी खाते थे ।

अब कमेटी ने गलियां बिल्कुल साफ रखनी शुरु कर दी हैं । दिन में चार बार सफाई होती है । कहीं गन्दगी का नाम नहीं दिखाई देता । और हमारे सुअर भूखों मर रहे हैं.

क्या गरीबों को दो रोटी खाने का हक भी नहीं है ।

चन्दगी राम,
रैगडपुरा,
दिल्ली,

संपादक जी

मैंने २५ तारीख को रात को बारह बजे इंडियागेट पर एक स्कूटर वाले से चिराग दिल्ली चलने के लिये कहा। वह फौरन तैयार हो गया (किराया भी ठीक लिया)।

रात की सर्दी के कारण मुझे निमोनिया हो गया। पहले स्कूटर वाले अपनी मनपसंद जगह छोड़ और कहीं जाने को तैयार नहीं होते थे। अगर उसने भी इंकार किया होता तो मुझे निमोनिया न हुआ होता !

राम देव पाशी
गली कूंचा
दिल्ली

संपादक जी,

हमारी कोलोनी में २४ घंटे पानी आता है और प्रेशर भी अच्छा रहता है। रात को गलती से नल खुला रह जाये तो मकान में बाढ़ सी आ जाती है तथा बहुत नुकसान होता है। क्या जल विभाग वाले पानी कम प्रेशर पर दिन में केवल एक दो घंटों के लिये सप्लाई कर नागरिकों को परेशानी से मुक्ति नहीं दिला सकते।

अनवर अली
बल्ली मारान

संपादक जी,

मैं संपादकों के नाम जितने भी पत्र लिखता हूं वे बिना काट छांट किये ठीक वैसे ही छाप देते हैं और मेरे घर वालों व मेरे मित्रों को मेरी भौंडी भाषा का पता चल जाता है जिससे मुझे कभी २ बहुत शर्मिन्दगी का सामना करना पड़ता है।

देवनन्दन
हाथरस

सम्पादक जी,

मैं एक दुखिया विधवा हूं। पिछले महीने एक एक्सीडैंट में मेरे पति का अचानक निधन हो गया। उनका एक लाख रुपये का बीमा था। उनकी लाश उठने भी न पाई थी कि बीमा निगम वाले आये और बीमे के एक लाख रुपये दे गये। यह हादसा सबके सामने हुआ। रुपये मिलने के कारण मुझे धूमधाम से अर्थी उठवानी पड़ी। इसी काम में बीस हजार खर्च हो गये।

क्या बीमानिगम वाले जरा सब्र से काम नहीं ले सकते? इतनी जल्दी क्या पड़ी थी। कुछ महीने बाद मिले होते तो रुपये सहेज कर रखती।

''एक दुखियारी विधवा''

संपादक जी,

हाल में ही मुझे मेरठ में एक पुलिस चौकी जाने का अवसर प्राप्त हुआ। वहां सभी पुलिस मैन व इन्सपैक्टर बहुत तहजीब से पेश आये। गाली गलौज का प्रयोग करना तो दूर मुझे ऐसा लगा जैसे किसी लखनऊ के नवाब के घर आया हूं। मुझे यह सब देख कर बहुत दुख हुआ।

देश में बदतमीजी और गाली गलौज की परंपरा पुलिस वालों के कारण ही जिन्दा है। वही अगर तमीज से पेश आने लगे तो इस परंपरा का क्या होगा? लोग बदतमीजी और गालियां बिल्कुल भूल जायेंगे। गाली देने से दिल की भड़ास निकलती है। दिल हल्का होता है व मानसिक तनाव से मुक्ति मिलती है। अगर अभी उचित कदम न उठाये गये और तमीज़ को काबू में न रखा गया तो देश में मानसिक तनाव से उत्पन्न होने वाली बिमारियों की बाढ़ आ जायेगी।

डाक्टर प्रेम स्वरूप
मनोविशेषज्ञ
मेरठ

संपादक जी,

कुछ समय पहले मेरे पिताजी को दिल का दौरा पड़ा था उन्हें हम विलिगंडन हास्पिटल ले गये। वहां पहुंचते ही फौरन एक दर्जन डाक्टरों ने उन्हें जांचा और उपचार किया। वे एक घंटे में बिल्कुल ठीक हो गये और हम घर लौट आये।

घर पर दिल के दौरे की खबर सुन कर रिश्तेदार इकट्ठे हो गये थे उन्होंने पिता जी को चंगा देखा तो बुरा मान गये कि उनके साथ मज़ाक किया गया है। अगर डाक्टर आराम के साथ टाईम लगा कर उपचार करते तो हमें रिश्तेदारों के सम्मुख झूठे धोखेबाज़ न बनना पड़ता।

राधे लाल वर्मा,
राम निवास, श्री निवास पुरी

संपादक जी,

मैं ने गत सप्ताह अपने कलकत्ते रहने वालों रिश्तेदारों को अपने आने का तार भेजा। तार बहुत जल्दी उन्हें दिया गया। मैं किसी कारण बश न जा सका और वे मेरी इंतजारी करते रहे। अगर तार ज़रा लेट मिलता तो उन्हें इतनी इंतजारी ना करनी पड़ती।

शम्भु प्रसाद बैनर्जी
नयी दिल्ली

फैण्टम-जंगल शहर

बड़े निर्दय मारने वाले !
तुम जो भी हो, मैं तुम्हें मार दूंगा !

बहुत सी झड़पों में जीतने वाला . . .
ऊह

तारपीडो को उसका गुरु मिल गया !
तारपीडो तुम वहां क्या कर रहे हो ?

तारपीडो तुम जहाज़ को हिला रहे हो !
अरे, तुम नीचे क्या कर रहे हो ?

क्या वह बेवकूफ़, सोने के बक्सों में कुछ कर रहा है !
मैं जहाज़ को स्वयंचालक पर लगा कर देखता हूं।

?!

एक स्तब्ध क्षण के लिये 'केप' अनहोनी की तरफ देखता है . . .
?!

धड़ाक

हम तो उड़ रहे हैं यह भीतर कैसे घुसा, जो भी है ?

धड़म धड़म

कौन है वह ?
धड़म धड़म

?!
?!

वो चोटी, जोकों ने इसके बारे में क्या कहा था?
वो फैंटम सिर वोटी है

फैन्टम चलता फिरता भूत है, वो मर नहीं सकता।

वो . . .वो आदमी नीचे! वो फैन्टम है?

हां! वही फैन्टम है?
बैग बैग

'जोको' ने उस चिन्ह के लिये क्या कहा था?
फैन्टम का चिन्ह, मतलब ये फैन्टम की रक्षा में है।

क्या ये सोने के लिए आया है? ये यहां ऊपर कैसे आया? क्या ये . . .आह . . .भूत है?
बैग बैग

हवा में, फैन्टम प्रतीक्षा करता है . . .

वो कोई भूत नहीं है. उसने तारपीडो को सोने के लिये बेहोश किया है। ये कोई बदमाश है . . .सोने क पीछे पड़ा है . . .

मैं उसे अभी गोली नहीं मार सकता . . .हवा में, परन्तु जब हम उतरेंगे!
आह! सिगनल, पेट्रौल समाप्त हो रहा है।
BUZZZ

ये पेट्रौल के टैंक की आवाज़ है लगता है जबरदस्ती उतरना पड़ेगा . . .

केवल इतना पेट्रोल कि किसी ठिकाने बिना उतरना . . .सोने और उस बदमाश के साथ

मैं उतर कर उसे गोली से उड़ा दूंगा! . . .
!!
?

आदमी चिड़िया फैन्टम सिर के पास उतरी !
बोलते ढोल, आदमी
चिड़िया फैन्टम सिर के पास उतरी !
आदमी चिड़िया फैन्टम सिर के पास उतरी !
अब मैं उस बदमाश को गोली से उड़ा दूंगा !
बदमाश कहां गया ! गया !
CONT'D.
पेट्रौल समाप्त . . .जबरदस्ती उतरना पड़ा. आदमी चिड़िया फैन्टम सिर पर . . .
!!
आदमी चिड़िया फैन्टम सिर पर . . .
बोलते ढोलों की अवाज़ वाम्बासी और ललोंगों पहुंची, . . .फैन्टम सिर पर
हमारे सोने के साथ !
हैलीकोप्टर के अन्दर . . .
?
बदमाश भाग गया ! यहां कोई छुपने का स्थान नहीं . . .बाहर गया . . .
तारपीडो उठो। अभी भी बुझी बत्ती के समान ! ये इसके जबड़े पर क्या है ?

आदि मानव
अहा यह कैसे जानवर हैं? आज तक नहीं देखा दो टांगों पर चल रहे हैं। न इनके सींग हैं, न नाखून हैं और न ही तेज दांत नज़र आते हैं। यह जानवर अपना बचाव कैसे कर पाता होगा? मेरे जैसे दैत्य को तो देख कर ही यह गिर पड़ेगा। देखने से लगता है मांस बड़ा मुलायम और स्वादिष्ट होगा। ज़रा डराऊं इन्हें।
हुर्रर्र फुर्रर्र शॉऽऽऽऽऽ।

नासपीटे तेरे घर में तेरी मां बहने नहीं हैं? पीछे से शूंऽऽऽ करता फिरता है। तेरे खानदान में किसी ने तमीज नहीं सीखी क्या? सत्यानाश हो तेरा, तेरी नाक में कीडे पड़ें। तेरा जवान बेटा मर जाये। तेरी बीबी विधवा हो जाये। तेरी सींगे सड कर गिर जाये। तेरे दांत टूट जायें। तेरी चमड़ी में से जहर फूट कर बाहर निकले। तू कोढ़ी हो जा। अंधा हो कर भीख मांगता फिरे। चूल्लू भर पानी में डूबमर। तुझे ऐसी जगह मार पड़े जहां पानी भी न हो।

ओ! मेरा सिर अब तक चकरा रहा है। इतनी जहरीली जुबान है कि मुंह खोले तो दूर से ही सैंकड़ों साँपों का सा डंक मारे। और मैं इस जानवर को समझ रहा था कि बड़ा मासूम है इसके पास बचाव का कोई साधन नहीं है।

नये जमाने की सौन्दर्य तुलना

पुराने जमाने की तुलनायें जैसे कमान जैसी भौंहें, कटार जैसी आंखें व घटाओं जैसे केश या गुलाब की पंखुड़ियों से होंठ आदि अब आऊट ऑफ डेट लगने लगे हैं। क्यों न नये युग के अनुरुप नयी समाजवादी तुलनाओं की खोज की जाये जैसे . . .
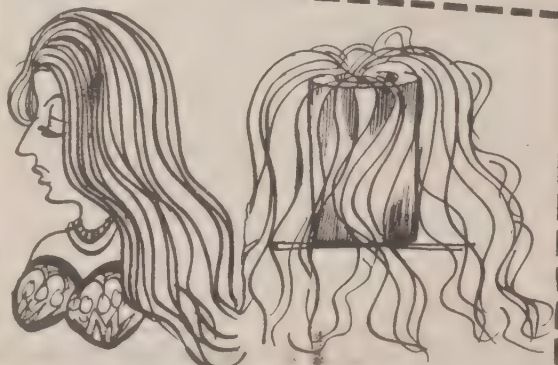
लिक्विड हाइड्रोजन जैसी जुल्फें

(सुराहीदार गर्दन की जगह)

टी.वी. ट्रांसमिशन

टॉवर जैसी गर्दन
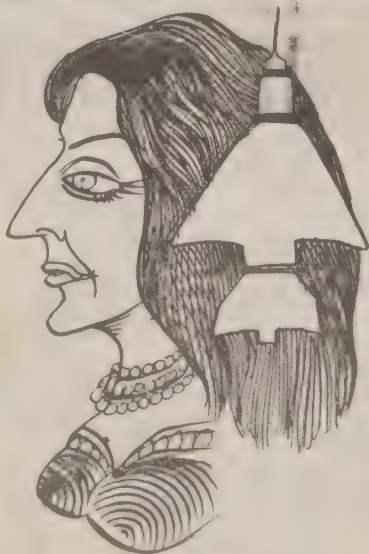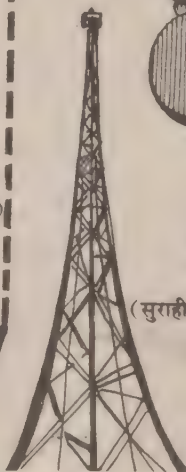
मिग फाइटर के विंग जैसी नाक

स्कूटर की स्टेपनी जैसा जूड़ा
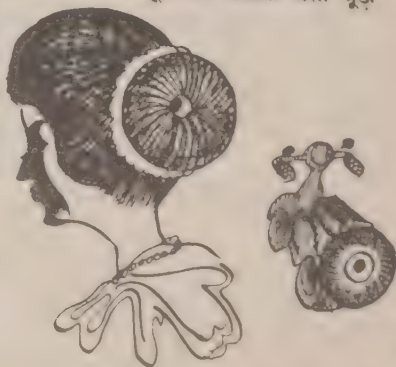
(मोतियों की माला जैसे दांत की जगह)
युद्धक जहाज के डैक पर खड़े नौसैनिकों की पंक्ति जैसे दांत
INS TOOTSIE
इम्पोर्टेड कार के टायरों जैसे लोचन यानि नयन
ब्रेन सर्जरी के फोरसेप जैसी पलकें
प्रैशर कुकर के हैंडिल जैसे होंठ
(मय के प्याले जैसे मद भरे नैन की जगह)
पैंड्क्स की गोलियों जैसी आंखें
(कमान जैसी भवों की जगह)
लैम्प पोस्ट जैसी भवें
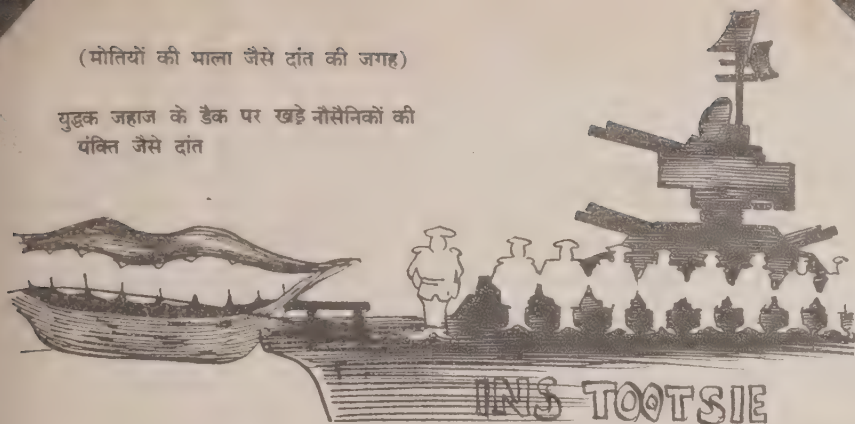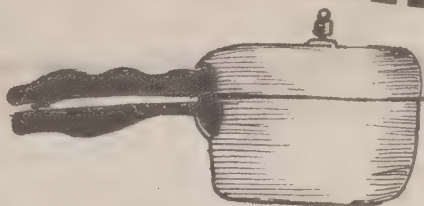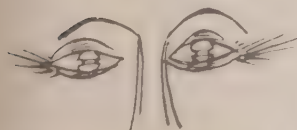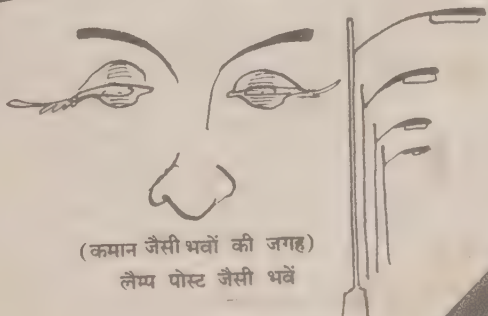
दीवाना फ्रेंड्स क्लब

श्री मोहन भगत 'राजू', वांझी बाजार, संताल परगना (बिहार), २० वर्ष, किताब पढ़ना, फिल्म देखना आदि।
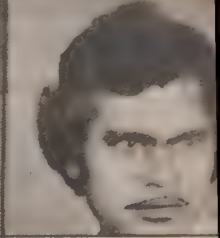
दीपचन्द कपिल,१८-ए सावन पार्क, अशोक विहार, दिल्ली ५२, १८ वर्ष, क्रिकेट खेलना, दिवाना पढ़ना

हाजी जलालुददीन अन्सारी, हिना प्रिन्टस, ज० ३०/७५ ए छोहरी, वाराणसी २२१००१, १८ वर्ष, क्रिकेट।

जे. के. रोमू ''टीटू'', भारत-स... शाहबाद कुरूक्षेत्र, २० वर्ष, प्या... वातावरण में रहना।

नन्दू, C/O खेल सिंह बग्गा, करम गाँव कालपी रोड इटावा, १७ वर्ष, बड़ों का आदर करना, पढ़ना, घूमना।

राजेश शर्मा, ५३, हाउसिंग कालोनी, (पो.आ के पास)२३ वर्ष, शायरी करना, पत्र मित्रता।

कृष्ण चन्द्र सोनी, इन्डोनेशनल न्यूज एजेंसी बस स्टैंड. पावर हाउस, भिलाई-४९००११, १९ वर्ष,

राजेन्द्र सिंह कश्यप, कनखंल मौ० द... जि० सहारनपुर यू०पी०, २३ वर्ष, इलाके में साइकिल चलाना

दिलावर हुसैन दिलकश, दिलकश रे० लि० क्लब, स्टेशन रोड़, खगड़िया, २५ वर्ष, पत्र मित्रता, फरमाईश।

बिल्लू सिंह, पायल सिनेमा के पास रोड़, २४ वर्ष, रेडियो और टेप सुनना। दुश्मनों की पिटाई करना।

रविन्द्र हाण्डा, मोती बाजार, बटाला, २१ वर्ष, पत्र मित्रता, शतरंज खेलना, क्रिकेट खेलना, सिक्के संग्रह करना।

विजय शंकर मिश्र, छात्र बी.ए.एम... (बी.यू.) द्वारा रवि न्यू भैरायटी स... छतौनी चौक - मोतिहारी (बिहार),
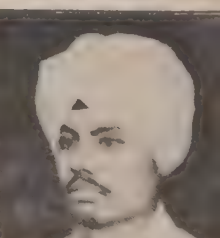
तिलक राज अरोरा, म.न. १५६, खवेश ज्ञान, खुरजा - २०३१३१ (उ०प्र०), १८ वर्ष, घूमना, पत्रिकाएं पढ़ना

दरोगा प्रसाद मिश्रा, मिश्रा पान बिडी शाप सासुन डाक कुलावा बम्बई न० ५, २२ वर्ष, झगड़ा देखना, झगड़ा लगाना।

अरसद मसुद, रीजनल हॉस्पीटल फुसरो, पो० बेरमो, जिला गिरडीह, १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना, फिल्मे देखना

बलदेव सिंह टाक, १/३, शान्ति न... भिलाई, १७ वर्ष, पढ़ना, फिल्म देख... रेडिओ सुनना।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंड्शिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

सुरेन्द्र कुमार मेहता, मेहता फाइनेंस कारपोरेशन, ४, वीरप्पन स्ट्रीट, मद्रास-१, १८ वर्ष, क्रिकेट खेलना, दिवाना पढ़ना.
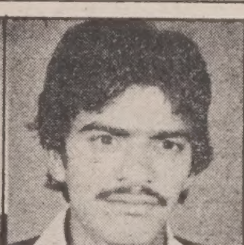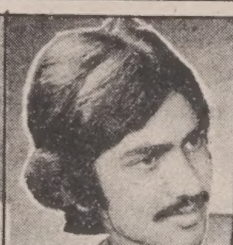
योगराज प्रेमी निर्मल भवन, कुल्लू हि. प्रदेश. १७५१०१ क्रिकेट व खिलाड़ी बहस करना,

धनपत कुमार, श्री सम्पत मल जैन, खगड़िया, मुंगेर (बिहार), १८ वर्ष, ड्राइविंग, फोटोग्राफी करना, पेंटिंग करना

मोहम्द इसहाक जंगी, महावतों की मस्जिद भिश्ती पोल, २१ वर्ष, रेडियो में फरमाइशें भेजना पत्र मित्रता करना।
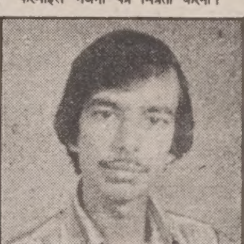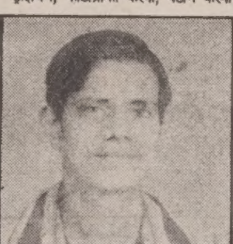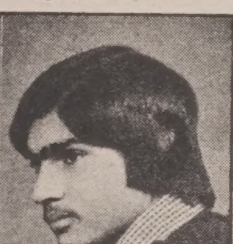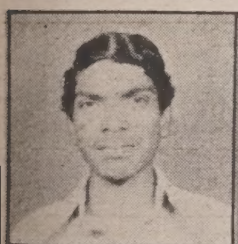
कमल कान्त बेरा, प्रेन स्टोर, पो० मौम भण्डार - ८३२१०३, १७ वर्ष, क्रिकेट, दिवाना टिकट संग्रह, मौन रहना।

वरिन्द्र कुमार वर्मा, सुपुत्र श्री सी० एल० वर्मा, ६७, धर्मदास स्ट्रीट नजीबाबाद, १८ वर्ष, चित्र कला।

गपास मोहम्मद, मोहल्ला अकबर कोतवाली, गली मनीहारान बरेली, २० वर्ष, सवाल का जवाब देना।

विष्णु कुमार राम मिलानी, ५५, आगे कालोनी नं० २, २२ वर्ष, पत्र मित्रता, नावल पढ़ना, फिल्म देखना, सैर करना।
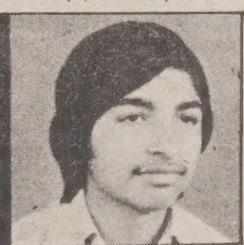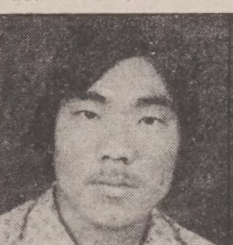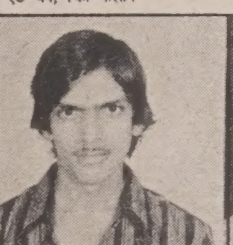
पदम शेरश्न, जध्या. मा. बि ताब्सेन, नेपाल, १६ वर्ष, पत्र मित्रता करना। तथा पढ़ना।

राम सागर, द्वारा मुन्नी लाल, परसुडीह, जमशेदपुर - २, १६ वर्ष, कैरम खेलना, दीवाना पढ़ना, किताब पढ़ना।

घन कुमार राई, गोरखा लाइन कटक - ३, उड़ीसा, २० वर्ष, पुलशें को हंसाना, तैस्ना, पत्र मित्राता करना।

शान्ति स्वरुप अरोड़ा, द्वारा मैंगू राम एन्ड सन्ज़, सुभाष मण्डी, कुरुक्षेत्र १३२११८, १९ वर्ष, पत्र मित्रता, दीवाना पढ़ना।
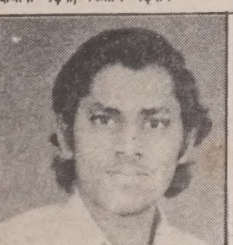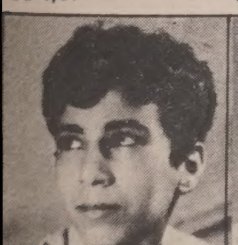
मुमताज अली, तकिया पारा बाबू लाल लाल दुर्ग, १५ वर्ष, किताबें पढ़ना, पत्र मित्रता, क्रिकेट कमेंटी सुनना।

विजय कुमार अग्रवाल, १५, चौक गया, २० वर्ष, पत्र मित्रता एवं प्यार कर दूसरे का प्यार पाना।

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब, ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली ११०००२.
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ साफ लिखें।

नाम ....

....

पता ....

....

आयु ....शौक ....

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।
प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

मिस बिन्दु को नमस्कार कर, साईकिल ले घर की ओर चला। घर पर उस की माता खाना रख रही थी तथा उसके पिता बैठे पाइप पी रहे थे। उन्होंने श्याम को देखकर कहा, 'हैलो बेटे, क्या सोच में पड़े हो। ऐसा मालूम होता है कि तुम किसी बड़ी समस्या का हल ढूंढ़ रहे थे। क्या तुम लड़के फिर किसी का खोया तोता या और इसी प्रकार का कुछ करने में लगे हो? नहीं 'पापा', श्यामबोला 'अभी तो हम 'अगस्टस आफ पोलैंड' की 'खोई प्रतिमा ढूंढ़ने में लगे हैं। क्या आप जानते हो वह कौन था?

''मुझे खेद है, मैं इस विषय में कुछ नहीं जानता? परन्तु अगस्टस की बात करने से मुझे ध्यान आया अब अगस्त है। क्या तुम जानते हो अगस्त के महीने का नाम कैसे पड़ा था?

श्याम के पिता ने उसे बताया, सुन कर वह ऐसे उछला मानों किसी ने उसके पिन चुभा दी हो। वह सीधा टेलीफोन के पास गया और माथुर कबाड़ी घर का नम्बर मिलाया और राजू को पूछा। उस ओर से बोलती मिसेज माथुर ने बताया कि सब लड़के छोटा ट्रक लेकर मालिब की ओर गये हैं।

''मैं अभी आ रहा हूं।'' मैं आकर उनका इन्तजार करूंगा, धन्यवाद।

इससे पहले की वह घर से बाहर जाता उसकी मां की आवाज़ ने उसे रोक दिया। श्याम! खाना तैयार है, जिस भी उलटे-सुलटे काम में तुम लगे हो वह तुम्हारे खाना खाने तक रुका रह सकता है।

अनमने मन से वह खाना खाने बैठ गया, जो कुछ उसे मालूम था राजू को तुरन्त मालूम होना चाहिए परन्तु उसने सोचा एक घंटे में इतना क्या फर्क पड़ेगा। इस ही समय महिन्दर राजू तथा गस मालिब के क्षेत्र में मि० पिटर सन् का घर ढूंढ़ते फिर रहे थे। आखिर में वे बड़े सुन्दर घर जिसके सामने का बाग बहुत अच्छी तरह रखा हुआ था के सामने रुके। राजू टाइल लगे सुन्दर रास्ते पर आगे-आगे घर की ओर बढ़ा। वहां जा कर उसने घंटी बजाई और एक ही क्षण बाद दरवाजा खुल गया।

मैं राजू माथुर. माथुर कबाड़ी से आ[illegible] प्लाटर प्रतिमाओं को वापिस ले जाने आया [illegible] राजू ने एक भली सी स्त्री से कहा।

हां, हां! व उधर हैं, कह कर वह उन्हें [illegible] के एक कोने में ले गई। वहां दानों प्रति[illegible] रखी थीं अगस्टस आफ पोलैंड की प्रतिमा [illegible] नाक-कान धोने से झड़ गया था, जबकी [illegible] फ्रांसिस वेरन को धोया नहीं गया था। वह [illegible] भरी थी पर, साबुत थी। 'मुझे इन्हें वापिस [illegible] का दुःख है' परन्तु मैंने इन्हें बाग में सजा[illegible] लिये ख़रीदा था और मेरे पति के अनुसा[illegible] बाग में धुल-धुल कर बहुत ही जल्दी नष्[illegible] जायेंगी।

'कोई बात नहीं मैडम! राजू ने अगस[illegible] के वापिस मिल जाने की खुशी को छुपाते [illegible] उत्तर दिया। ये रहे आपके पैसे, हम अभी [illegible] लिये जाते हैं। उसने मिसेज पीटरसंन को उ[illegible] पैसे वापिस कर अगस्टस की प्रतिमा को [illegible] कर ट्रक की ओर प्रस्थान किया, दूसरी प्रति[illegible] महिन्दर ने उठाई और साथ हो लिया। उन[illegible] प्रतिमाऐं अगली सीट पर हंस और गस के ब[illegible] रक्खीं तथा दोनों ट्रक के पिछले भाग में [illegible] गये। फिर ट्रक घर की ओर चल पड़ा।

क्या तुम सोचते हो कि अगस्टस में 'च[illegible]कती आंख' है, महिन्दर ने उत्सुक हो कर र[illegible] से पूछा?

'मेरे विचार से इसकी बहुत सम्भावना है [illegible] 'घर पहुंचते ही हमें इसको तोड़ कर देख[illegible] चाहिए!' महिन्दर बोला।

हमें श्याम का इन्तजार करना चाहिए, उ[illegible] बहुत निराशा होगी यदि हमने उसके पीछे [illegible] प्रतिमा को तोड़ दिया।

कबाड़ीघर में श्याम मिसेज माथुर के प[illegible] बैठा लड़कों के आने की प्रतीक्षा कर रहा थ[illegible] शनिवार के दिन कबाड़ीघर काफी देर तक खु[illegible] रहता था ताकि लोग आ कर अपनी पसन्द [illegible] वस्तु छांट लें। अधिकतर बहुत से लोग कब[illegible]ड़ीघर में घूमते रहते थे परन्तु आज केवल [illegible] चार ही लोग औज़ार मशीनों को देखते भाल[illegible] घूम रहे थे।

क्रमशः

प्रेमा नारायण
दीवाना

Regd. No. D(DN)-275

स्वीकार नहीं किया।''

दर्शकों को इसी आक... रूप में पसन्द आती हैं?'' मैंने पूछा

''जी हां! तभी तो हर निर्माता मेरे लिये

...नहीं कि प्रे...

...भूमिका को साक्ष...

दीवाना साप्ताहिक के पाठक यदि प्रे... नारायण से पत्र व्यवहार करना चाहें उनका पता नोट कर लें.

१३ पंचशील, वाटर फील्ड रो...
बान्द्रा, बम्बई ४०००५...